रजत जयंती वर्ष

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

पौष-माघ, कलियुगाब्द 5120, जनवरी 2019

सावधान
नशा छोड़ो परिवार जोड़ो
घातक है

मूल्य: 10/- प्रति

मातृवन्दना

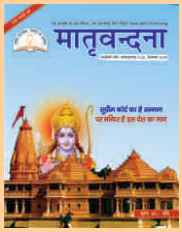

सदस्यता अभियान 2019-20

1-15 फरवरी 2019

बहुमूल्य सामग्री एवं सुन्दर कलेवर के साथ पाठकों की सेवा में समर्पित

हिमाचल की सर्वाधिक प्रसार वाली पत्रिका	सर्वाधिक स्थानों तक पहुंच
35 हज़ार परिवारों तक पहुंच	दो लाख से अधिक पाठक
नववर्ष का आकर्षक कैलेण्डर नि:शुल्क	समाचार ही नहीं संस्कार भी

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

प्रबन्धक, मातृवन्दना

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष : 0177-2836990 **7650000990**

email: matrivandanashimla@gmail.com

website: www.matrivandana.org

वार्षिक शुल्क

100 रुपए

आजीवन सदस्य (15 वर्ष)

1000/- रुपए

नियमित पाठकों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण उपर्युक्त समय पर अवश्य करवाएं।

आप भी इसके सदस्य व वितरक बनकर समाज में स्वच्छ व राष्ट्रीय विचारों के प्रचार में सहभागी बनें।

सूचना

वर्ष 2019-20 में मातृवन्दना पत्रिका प्रकाशन के 25 वर्ष पूरे होने पर रजत जयंती समारोह का समापन कार्यक्रम किया जा रहा है। इस हेतु 2019 का वर्ष प्रतिपदा विशेषांक 'राष्ट्रभाव जागरण' प्रकाशित करने की योजना बनी है। अत: लेखकों एवं कवियों से निवेदन है कि अपने लेख व कविताएं 28 फरवरी 2019 तक मातृवन्दना सम्पादकीय कार्यालय में हस्तलिखित या टाईप करवाकर डाक या मेल द्वारा निर्धारित तिथि तक अवश्य भेज दें।

सम्पादक, मातृवन्दना

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष: 0177-2836990 मो. 9805036545

email: matrivandanashimla@gmail.com | website: www.matrivandana.org

मातृवन्दना पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित करने हेतु सम्पर्क करें:

विज्ञापन प्रबंधक: मो.न. 83510-92947

दूरभाष: 0177-2836990

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

email: matrivandanashimla@gmail.com | website: www.matrivandana.org

गुणानामन्तरं प्रायस्तज्ञो वेत्ति न चापरम्।
मालतीमल्लिकाः मोदं घ्राणं वेत्ति न लोचनम्॥

गुणों, विशेषताओं में अंतर प्रायः विशेषज्ञों, ज्ञानीजनों द्वारा ही जाना जाता है, दूसरों के द्वारा कदापि नहीं।
जिस प्रकार चमेली की गंध नाक से ही जानी जा सकती है, आंख द्वारा कभी नहीं।

वर्ष : 19 अंक : 1

मातृवन्दना

पौष-माघ, कलियुगाब्द
5120, जनवरी, 2019

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक
वासुदेव शर्मा

✡

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
मीनाक्षी सूद
डॉ॰ अर्चना गुलेरिया
नीतू वर्मा

✡

वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर

✡

पत्रिका प्रमुख
शांति स्वरुप

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990

e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

नशा और नफरत दोनों समाज के दुश्मन

भारत की जनसंख्या का गुणात्मक पक्ष देखा जाए तो वह है यहाँ की आबादी का पचास प्रतिशत युवाओं का होना। इसलिए भारत को सबसे युवा देश होने का गौरव प्राप्त है। लेकिन क्या युवाओं की पर्याप्त संख्या होने मात्र से ही देश संतोष कर सकता है? शायद नहीं। क्योंकि जिस गति से बिना सोचे विचारे देश कीआबादी को बढ़ने दिया गया,उतनी गति से तत्कालीन सरकारों द्वारा देश के नागरिकों के लिए काम के उतने अवसर पैदा नहीं किए गये। वे अवसर चाहे अच्छी शिक्षा के होंया उचित स्वास्थ्य सेवाएं उलब्ध करवाने या फिर रोजी रोटी कमाने के पर्याप्त साधन हों।

सम्पादकीय	नशा और नफरत दोनों समाज	3
प्रेरक प्रसंग	त्याग और सेवा हमारे राष्ट्रीय	4
चिंतन	सामाजिक चेतना से समाप्त होगी	5
आवरण	परिवार और युवा	6
संगठनम्	सिक्ख दंगे के दोषियों को	10
देश-प्रदेश	अवैध ढंग से पैसा कमाने	12
देवभूमि	ऊना जिले की लोहड़ी	14
पुण्य जयंती	स्वतंत्रता बलिदान चाहती है	16
घूमती कलम	पत्थरबाज सा विपक्ष	17
समसामयिकी	राम मंदिर निर्माण के लिए	20
काव्य जगत	नशा	21
पुण्य स्मरण	हरि चरण में लीन हो गए	22
स्वास्थ्य	गुणों का भंडार है आंवला	23
प्रतिक्रिया	बूढ़ी राजनीति व परिवारवाद	24
महिला जगत	बहुएं होती हैं अधिक केयरिंग	25
युवापथ	युवाओं को इतिहास से रखा	26
कृषि जगत	सूदना गांव-गाजर गांव	27
विश्व दर्शन	राष्ट्रपति चुनाव लड़ने को तैयार	29
विविध	पार्टी फंड से पूरा करें	30
बाल जगत	तीन अजूबे भाई	10

पत्रिका के बारे में की चर्चा

कुमारसैन, 27 दिसम्बर (सोनी): सरस्वती विद्या मंदिर कुमारसैन में बीत्वार को मातृ वंदना पत्रिका पाठक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रामपुर जिला प्रचार प्रमुख मोहन मेहता विशेष रूप से मौजूद रहे। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में मातृ वंदना पत्रिका के योगदान के बारे में कार्यक्रम में मौजूद पाठकों को विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष अश्विनी सोनी ने बताया कि पत्रिका समाज को संस्कारमय व शिष्टाचार युक्त बनाने में अपना योगदान दे रही है। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ रामपुर के जिला बौद्धिक प्रमुख अजीत, सरस्वती विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य यशवंत भारद्वाज व मातृ वंदना पत्रिका के कई पाठक मौजूद रहे।

कुमारसैन : पाठक सम्मेलन में मौजूद पदाधिकारी व अन्य।

लोगों को बताई मातृवंदना पत्रिका की खूबियां

ज्यूरी (रामपुर बुशहर)। झाकड़ी में मातृवंदना पाठक सम्मेलन झाकड़ी पंचायत के उपप्रधान बीरबल कश्यप की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस दौरान आयोजित एक दिवसीय सम्मेलन में जिला प्रचार प्रमुख मोहन मेहता ने मातृवंदना के पाठकों को बताया कि हिमाचल की मासिक पत्रिका मातृवंदना में बाल, तरुण और प्रौढ़ों के लिए खबर के साथ-साथ बाल कहानी, संस्कारी, देशभक्ति और संस्कृति का दर्शन करवाती है। झाकड़ी खंड के संघ चालक प्रताप नेगी ने भी कार्यक्रम में मौजूद लोगों को मातृवंदना की खूबियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। पाठक सम्मेलन के अध्यक्ष बीरबल कश्यप ने मातृवंदना पत्रिका में छपने वाले देशभक्ति और संस्कार की प्रशंसा की। इस अवसर पर संघ चालक प्रताप नेगी, जिला शारीरिक प्रमुख पुष्प राज नेगी, मार्ग प्रमुख जीवन नेगी, करमीर सिंह, रामेश्वर सैनी, देवी दयाल, जीवा नंद शर्मा, सुशील कुमार, संजय सिंटू, रिंकू राम, हरीश शर्मा और राजेंद्र रावत सहित अन्य मौजूद रहे। ब्यूरो

शिमला के जुन्गा में पाठक सम्मेलन में उपस्थित पाठक गण

शिमला के खलीणी में मातृवन्दना पाठक सम्मेलन में उपस्थित पाठक गण

जनवरी 2019 के शुभ मुहूर्त

तिथि	नक्षत्र	विवाह मुहूर्त
17 जनवरी (गुरुवार)	रोहिणी, मृगशिरा	22:34 से 7:18
18 जनवरी (शुक्रवार)	मघा	07:18 से 22:10
23 जनवरी (बुधवार)	उत्तरा फाल्गुनी, हस्त	07:17 से 13:40
25 जनवरी (शुक्रवार)	हस्त	14:48 से 7:16
26 जनवरी (शनिवार)	अनुराधा	07:16 से 15:05
29 जनवरी (मंगलवार)		15:15 से 3:02

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990, 7650000990
ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को स्वामी विवेकानंद जयंती, लोहड़ी, मकर संक्रांति, नेताजी सुभाष जयंती, पूर्ण राज्यत्व दिवस व गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (जनवरी)

सफला एकादशी	01 जनवरी
स्वामी विवेकानंद जयंती	12 जनवरी
लोहड़ी/ श्री गुरू गोविंद सिंह जयंती	13 जनवरी
मकर संक्रांति	14 जनवरी
सेना दिवस	15 जनवरी
पुत्रदा एकादशी	17 जनवरी
नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती	23 जनवरी
हिमाचल पूर्ण राज्यत्व दिवस	25 जनवरी
गणतंत्र दिवस	26 जनवरी
षट्तिला एकादशी	31 जनवरी

नशा और नफरत दोनों समाज के दुश्मन

भारतवर्ष जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में दसरे स्थान पर ठहरता हैऔर जिस अबाध गति से सामाजिक असंतुलन बनाते हुए देश की जन संख्या बढ़ रही है, आने वाले समय में यह स्थिति किसी भूचाल से कम नहीं होगी। चिंता की बात तो यह है कि कोई भी राजनीतिक दल इस विषय पर अपना मुंह नहीं खोलता। कुछ सामाजिक और धार्मिक नेता जरुर इस पर बात करते हैं, तो उन्हें साम्प्रदायिक ठहरा दिया जाता है।

भारत की जनसंख्या का गुणात्मक पक्ष देखा जाए तो वह है यहाँ की आबादी का पचास प्रतिशत युवाओं का होना। इसलिए भारत को सबसे युवा देश होने का गौरव प्राप्त है। लेकिन क्या युवाओं की पर्याप्त संख्या होने मात्र से ही देश संतोष कर सकता है? शायद नहीं।क्योंकि जिस गति से बिना सोचे विचारे देश कीआबादी को बढ़ने दिया गया,उतनी गति से तत्कालीन सरकारों द्वारा देश के नागरिकों के लिए काम के उतने अवसर पैदा नहीं किए गये। वे अवसर चाहे अच्छी शिक्षा के होंया उचित स्वास्थ्य सेवाएं उलब्ध करवाने या फिर रोजी रोटी कमाने के पर्याप्त साधन हों। युवाओं की ज्यादा संख्या देश के लिए बड़े गर्व की बात तो है लेकिन उसके साथ साथ जम्मेदारी उससे भी ज्यादा होती है।उनके लिए समयानुकूल शिक्षाऔर रोजगार की व्यवस्था करना शासन की प्राथमिकता होनी चाहिए। वरना यह बढ़ती आबादी का तुफान और युवाओं का समाज में स्वच्छन्द आचरण देश के लिए किसी भी दृष्टि से सार्थक और उपयोगी नहीं होगा।

युवा शक्ति जोश और जुनून से सराबोर होती है। उसे उसकी योग्यता और क्षमता के अनुकूल काम मिलना चाहिए। नहीं तो बेकार दिमाग शैतान का घर कहावत घटित होते देर नहीं लगती। आज समूचे देश और प्रदेश में युवा शक्ति चिंता का विषय बनी हुई है। चिन्ता का कारण है युवाओं में बढ़ती नशा वृत्ति। आज किसी भी समाचार पत्र पर किसी न किसी रुप में नशा कारोबार और समाचार सुर्खियां पा रहे होते हैं। नशा जैसी बुराई का शिकार सिर्फ एक व्यक्ति नहीं होता बल्कि परिवार,समाज और फिर राष्ट्र तक इसकी गिरफ्त में आ जाता है।जिस देश का युवा नशा जैसी घृणित वृत्ति में फंस जाता है उस समाज और देश पर संकट आने में देर नहीं लगती। इस बीमारी से लड़ने के लिए प्रत्येक नागरिक, शिक्षण संस्थाओं, सामाजिक संस्थाओं,अभिभावकों और प्रशासन को एकजुट होकर काम करना होगा। सिर्फ पुलिस और प्रशासन को दोष दने और कोसने से काम नहीं चलेगा, जरुरत है सजग और सतर्क होने की।

हमारे देश में राजनीतिक दल सत्ता प्राप्त करने के लिए कैसे कैसे हथकंडे और किन लोगों का उपयोग कैसे किया जाए, यह खेल तब शुरू हुआ था जब पहली बार केन्द्र में स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में एन डी ए की सरकार सत्ता में आई थी। तब भी कई ऐसे विषय उठाए गए थे जिनसे कि समाज में विभेद पैदा हो और भोली भाली जनता को गुमराह किया जा सके।उस समय भी तथा कथित बुद्धिजीवियों द्वारा ऐसे विषय उठाए गए थे। ठीक उसी तर्ज पर उसी गैंग द्वारा इस बार भी एन डी ए की सरकार बनने के बाद से ही कभी असहिष्णुता का शगूफा तो कभी सम्मान वापसी और बनावटी डर की बातें मीडिया में उछाल कर देश का माहौल खराब करने की कोशिश की जा रही है। आजकल कलात्मक फिल्मों के हीरो कहे जाने वाले नसीरूद्दीन शाह अपने बच्चों को महसूस होने वाले डर के कारण से सुर्खियों में हैं। मजे की बात यह है कि इनका भय समय सापेक्ष और इक तरफा है। इन्हें तब भय नहीं लगता जब अयोध्या में कारसेवकों को गोलियों से भून दिया जाता हैऔर गोधरा में ट्रेन में बैठे कारसेवकों को जिन्दा जला दिया जाता है। केरल में आए दिन होने वाली राष्ट्रभक्तों की हत्याओं से उन्हें डर नहीं लगता। जम्मू कशमीर में सेना और पुलिस बलों पर की जाने वाली पत्थरबाजी से उन्हें डर नहीं लगता।

ऐसे लोगों द्वारा दिये जाने वाले इस तरह के बयानों से लगता है कि वे किसी खास एजैंडे के तहत काम कर रहे हैं। इन लोगों को देश की आम जनता ने अपने सिर आंखों पर बिठाकर उन्हें अपना हीरो माना होता है। परन्तु इनकी पर्दे की सोच और वास्तविक सोच में इतना अन्तर है, अब जनता इनका असली चेहरा पहचानने लगी है।

त्याग और सेवा हमारे राष्ट्रीय आदर्श

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के संस्थापक आशीष गौतम ने कहा कि सेवा पर बोलना आसान होता है और करना कठिन। जिस तरह विज्ञान एक दृष्टि और समझ है, उसी तरह सेवा कर्म है, व्यवसाय नहीं। सेवा में बोला नहीं जाता, केवल किया जाता है। गोमुख से चलकर गंगा सागर तक पहुंचने वाली मां गंगा किसानों को खेती योग्य जल देती है।लोगों को शुद्ध जल प्रदान करती है। गंगा केवल देती है, किसी से कुछ नहीं मांगती। उसी तरह सेवाभावी केवल सेवा करता है। वह जिधर से गुजरे सेवा की सुगंध आनी चाहिए। त्याग और सेवा हमारे राष्ट्रीय आदर्श हैं। भगिनी निवेदिता का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने दीक्षा क्रम में उनसे कहा था कि बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए महात्मा बुद्ध को 500 बार जन्म लेना पड़ा। तुम इसी जीवन में बुद्धत्व प्राप्ति के लिए लोगों की सेवा करो।

आध्यात्मिक पराकाष्ठा का मार्ग सेवा ही हैं कुम्भ सेवा और समरसता का दर्शन है।देश में लोग भले ही भूख और ठंड से मरते हों, लेकिन कुम्भ की परम्परा में आज तक एक भी व्यक्ति भूख और ठंड से नहीं मरा। सरकार वहां सभी तरह की सुविधाओं का प्रबंध करती है, लेकिन वह कुम्भ में श्मशान घाट इसलिए नहीं बनवाती, क्योंकि कुम्भ में किसी के मरने का एक भी उदाहरण नहीं मिलता है। आनन्द के लिए किया गया कर्म ही सेवा है। ❖

ज्ञान का महत्व शरीर से नहीं

बालक अष्टावक्र ने अपने मित्रों के साथ खेलकर घर लौटने पर अपनी माता से पूछा, 'हे माता! मेरे पिताजी कहां है?' वह बोली, 'पुत्र तुम्हारे पिता राजा जनक की सभा में विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ करने के लिए गए थे, किंतु अभी तक नहीं लौटे हैं। मैं भी चिंता से व्याकुल हूं।' यह सुनकर अष्टावक्र ने कहा, 'हे माता! चिंता मत करो मैं कल सुबह ही राजसभा में जाकर पता लगाऊंगा क्या बात है?' माता बोली, 'तुम बालक हो, राजसभा में तुम्हारा प्रवेश आसान नहीं है। वहां तुम्हारा उपहास भी हो सकता है, क्योंकि तुम्हारा शरीर आठ जगह से टेड़ा-मेड़ा है। अष्टावक्र बोला, 'मां डरो मत, मैं अपने पिता के साथ जल्द वापस आऊंगा।' यह कहकर अष्टावक्र ने राजसभा के लिए प्रस्थान किया। उसके टेड़े शरीर को देखकर सभा में उपस्थिन विद्वान ठहाके लगाकर हंसने लगे कि यह बालक भी हमारे साथ शास्त्रार्थ करेगा? उन विद्वानों की हरकत देखकर अष्टावक्र भी हंसने लगा। उसको हंसता देखकर सभा में उपस्थित सभी विद्वान आश्चर्य में पड़ गए। राजा ने अष्टावक्र से हंसने का कारण पूछा। अष्टावक्र ने कहा 'हे राजन! मैने सुना है कि आपकी राजसभा विद्वानों के द्वारा सुशोभित है किंतु ये तो झूठे, ज्ञान के घमंड में चूर हैं। मैं इन विद्वानों को देखकर हंस रहा हूं।' वह फिर बोला, 'हे राजन! निश्चय ही मैं पूछता हूं कि हड्डी, रक्त मांस और चमड़ी से लपटे हुए शरीर में देखने लायक क्या है। आप बताएं क्या टेढ़े शरीर में आत्मा भी टेढ़ी होती है? यदि नदी टेढ़ी है तो क्या उसका पानी भी टेढ़ा होता है?' राजा जनक अष्टावक्र के वचनों से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने बालक अष्टावक्र को अपना गुरु मानते हुए तत्वज्ञान प्राप्त किया। ❖

सामाजिक चेतना से समाप्त होगी नशाखोरी

-डा. दयानन्द शर्मा

आज ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जो मरकर भी जीने की चाह रखते हैं। संभवत: वे अल्पबुद्धि एवं दुर्भाग्यशाली लोग हैं। सब जानते हैं कि आज की आबोहपा ही विषैली है जिसमें आदमी घुट-घुट कर जी रहा है। असन्तोष, अवसाद, चिन्ता आदि के कारण भी उसकी सांसे थमती जा रही है। रही-सही कसर नशे की आदत ने पूरी कर दी है। नशे का यह जहर नई पीढ़ी में फैलता जा रहा है कि अभी से आने वाले कल की चिन्ता सताने लगी है। आधुनिक सम्पन्नता का एक अत्यन्त अनिष्टकारी लक्षण है, नशीले ग्रन्थों का व्यापक प्रयोग। दो-तीन दशकों की ही तो बात है जब नशीले पदार्थों के सेवन को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था और उनका सेवन करने वाले लोगों को कहीं लुक-छिप कर अपनी इच्छा पूर्ण करनी पड़ती थी।किन्तु आज सम्पूर्ण समाज की उदासीन स्थिति देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो नशे को सामाजिक मान्यता ही मिल चुकी है। शहर-गाँवों की एक जैसी स्थिति है। विवाहोत्सव हो अथवा अन्य उत्सव समारोह, सर्वत्र शराब आदि का खुल कर प्रयोग किया जाता है। अभिभावकों, परिजनों एवं अंग्रेजों को नशे एवं मौज मस्ती में डूबा देखकर किशोर एवं युवा पीढ़ी का इस ओर आकर्षित होना स्वाभाविक है। दुर्भाग्य तो इस बात का है कि सन्मार्ग पर चलने वाले अभिभावकों एवं परिजनों को अपनी किशोर सन्तानों को इस बुराई से बचाना कठिन प्रतीत हो रहा है।

दूसरा कारण है सन्तान मोह। अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों की प्रतिभा एवं बुद्धि कौशल का सही आंकलन न कर उन्हें अतिशय अपेक्षाओं की चाहना कर बैठते हैं। जब उनकी संतानें अपने माता-पिता की इच्छाओं के अनुरूप स्वयं को ढालने में अथवा सफलता प्राप्ति में असमर्थ हो जाती है, तो हताशा एवं कुण्ठा के कारण नशे से प्रवृत्त किशोरों की कुसंगति में पड़ जाती है। अतएव अभिभावकों को जागरूक होना बड़ा जरूरी है। आश्चर्य की बात है कि जहां एक ओर बेरोजगारी, आलस्य, अक्षमता, अकर्मठता, कुसंगति एवं दृढ़ निश्चय दूसरी ओर अमीर, आत्मनिर्भर उत्कृष्ट आजीविका सम्पन्न तथा अन्य व्यवस्था की युवाओं ने इसे फैशन की तरह स्वीकार कर रिलैक्सेशन एवं मौजमस्ती का साधन मान लिया है। किन्तु में यह भूल जाते हैं कि नशोखोरी एक ऐसा व्यसन है जो धीरे-धीरे आपने आगोश में समेट लेता है और चाह कर भी आप उससे दूर नहीं कर सकते। क्षण भर की उत्सुकता, उत्तेजना, कल्पना लोक का आनंद आपकी पूरी जिन्दगी को बर्बाद कर सकता है।

जीवन मूल्यों पर आधारित नैतिक शिक्षा का अभाव आज दृष्टिगत हो रहा है। समाज का सजग होना उतना ही आवश्यक है, जितना माता-पिता का संस्कारित होना। ये संस्कार तभी पनप सकते हैं जब हम अपने पूर्वजों एवं महापुरूषों के चरित्र एवं आदर्शों का स्मरण करेंगे। नैतिक शिक्षा पर आधारित पुस्तकें एवं धर्मग्रन्थों का पठन-पाठन भी अनिवार्य रूप से होना चाहिए। अष्टांग योग के माध्यम से जीवन संयमित किया जा सकता है। समाजिक संस्थाएं, आध्यात्मिक एवं योग गुरू तथा शिक्षक इस दुर्व्यसन से नई पीढ़ी को बचाने में कारगर भूमिका निभा सकते हैं। मीडिया को भी केवल सूचना तक न बन कर ऐसे उपायों का प्रचार-प्रसार करना चाहिए, जिससे समाज को इस दुर्व्यसन से मुक्ति मिल सके। अन्तत: समाज के सामूहिक प्रयत्नों से ही नशाखोरी का समाप्त किया जा सकता है। ❖

परिवार और युवा

-वासुदेव शर्मा

काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छत्ति धीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणां, निद्रयाकलहेन वा ॥

अर्थात्:- बुद्धिमान और सच्चरित्र लोग सद्साहित्य के अध्ययन- अध्यापन में अपना समय लगाते हैं। इसके विपरीत असामाजिक और मूर्ख लोग लड़ाई-झगड़े, आलस्य, सोने आदि में तथा अन्यान्य व्यसनों में फंसकर अपना समय बर्बाद करते हैं।

हमारे पूर्वजों ने समय को व्यतीत करने के लिए कितनी वैज्ञानिकता पूर्ण उक्ति कही है। समाज को सही दिशा देने वाला व्यक्ति सत्कार्यों से अपनी उपस्थिति दर्ज करवाता है और समाज को विघटन की ओर ले जाने वाला व्यक्ति कलह-क्लेश और दुर्व्यसनों में पड़कर असामाजिकता पैदा करने की कोशिश करता है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति अति प्राचीन है और इसको मानवोचित और मानवोपयोगी बनाने में सहस्राब्दियों तक ऋषि-मुनियों ने अपने प्रयास जारी रखे और जो बात समाज और व्यक्ति के हित में लगी उसी का उन्होंने बखान किया है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में नीत्ति-वाक्यों और नैतिक आचरण करने की प्रेरणा देने वाली सामग्री का अथाह भण्डार है। आवश्यकता उस पर अमल करने और व्यवहार में लाने की है। आज जब हम अपने समाज और देश के भावी करणधारों अर्थात युवा पीढ़ी की मन:स्थिति पर गौर करते हैं तो मालूम होता है कि यह हमारे उस नीति परक और ज्ञानोन्मुखी सत्साहित्य को देने वाले तथा ईश्वर तक से साक्षात्कार करने वाले योगियों और ऋषियों की परम्परा की वाहक पीढ़ी है क्या? इस विषय पर यदि सूत्र रुप में किसी एक व्यवस्था को जिम्मेदार माना जा सकता है तो वह है आजादी से भी पहले से चली आ रही हमारी शिक्षा व्यवस्था। शिक्षा से ही किसी भी समाज का मानवीय ढांचा गढ़ा जाता है। कोई भवन, राजमार्ग या पुल यदि अच्छा न बना हो तो दुबारा बनाया जा सकता है। परन्तु व्यक्ति का जीवन पुन: गढ़ना सम्भव नहीं होता। पीढ़ी दर पीढ़ी उसी शिक्षा पद्धति में शिक्षित समाज की सन्तान लाख कोशिश करने पर भी अपनी जड़ों को हरा-भरा नहीं रख सकती। क्योंकि अभिभावकों द्वारा युवाओं के भविष्य को लेकर कई तरह की अपेक्षाएं और दबाव भी काम कर रहे होते हैं। यहां बात वर्तमान भारत के युवाओं में बढ़ती नशे की आदत पर हो रही है। युवा वर्ग किसी भी देश का स्वाभिमान और उस देश का भविष्य होता है। भारत युवाओं के मामले में भाग्यशाली है कि इसकी आबादी का अधिकांश हिस्सा युवाओं का है। युवाओं को सही दिशा देना समाज का सबसे प्रमुख दायित्व तो है ही साथ ही शासन और सत्ता को चाहिए कि हमारे गौरवपूर्ण अतीत के साथ-साथ आधुनिक सोच के अनुसार शैक्षिक ढांचा कैसा हो इसकी व्यवस्था करे, तभी हमारी भावी पीढ़ियां राष्ट्रनिर्माण के साथ-साथ अपने भविष्य की संरचना करने में सक्षम होंगी। आधुनिक शिक्षा पद्धति में संस्कारशीलता और सच्चरित्रता में सामंजस्य का अभाव ही मुख्य कारण है कि बच्चे अनेक तरहों के दुर्व्यसनों में फंसते जा रहे हैं। जिस कारण से अनेक परिवार बरबाद हो रहे हैं।

पूर्व में हमारा सामाजिक ढांचा काफी हद तक वैज्ञानिक था। परिवार संस्था बड़ी मजबूत थी लेकिन पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण से हमने व्यक्तिवादी परम्परा का अनुकरण कर अपनी संयुक्त परिवार प्रणाली को त्याग दिया। उस पर आज बच्चों के अभिभावक यानि (माता-पिता) दोनों काम पर निकल जाते हैं और बच्चे रह जाते हैं, राम भरोसे। अभिभावकों और बच्चों के बीच का अन्तराल किसी भी अवांच्छित परिस्थिति को जन्म दे सकता है। ऐसी ही अवांच्छित परिस्थितियों के परिणाम स्वरुप हमारे युवा गलत लोगों की संगत में पड़कर नशे जैसी बुरी लत में फंस जाते हैं। नशे या दुर्व्यसन में फंसे युवा वर्ग का अपना ही भविष्य सुरक्षित नहीं है तो फिर राष्ट्र और समाज के लिए उससे क्या अपेक्षा की जा सकती है। यहां आवश्यक्ता है बच्चों को समय देने की, उनको एकान्त से बाहर निकालने की। उनके संगी-साथियों की पहचान करने की और स्कूल-कॉलेज से आते-जाते समय उनसे मिलने-जुलने वाले उनके मित्रों पर भी अपनी नजर बराबर रहनी चाहिए। ❖

नशे की चपेट में हिमाचल का युवा

-बस्ती राम

हिमाचल प्रदेश प्राकृतिक सुन्दरता और श्रेष्ठ जलवायु के लिए विश्व विख्यात है। प्रदेश की राजधानी शिमला को भारत की राजधानी होने का गौरव भी प्राप्त रहा है। प्रदेश जब भी अखबारों और समाचारों की सुर्खियों में रहता है तो उनमें कोई न कोई नेकी या खूबी छुपी रहती है। वह चाहे राष्ट्र सेवा को समर्पित सैनिक के जीवन की गाथा हो या किसी होनहार विद्यार्थी द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि या फिर सिने जगत और पर्यटन के क्षेत्र में कोई नई तकनीक के इस्तेमाल से जुड़ी हो। हिमाचल प्रदेश के जनमानस के स्वभाव का एक स्पष्ट चित्र देश के अन्य राज्यों के लोगों के मन में बसा रहता है। जैसे इस प्रदेश के उंचे पहाड़ों पर घने वनों में ऊंचे-ऊंचे सदाबहार देवदार के पेड़ घाटियों में सुन्दर और शान्त वातावरण बनाए रखते हैं। वैसे ही यहां के लोग अद्‌भुत साहस और ईमानदारीपूर्ण व्यवहार तथा चेहरे पर सहज और स्मित मुस्कान सदा बनाए रखते हैं। लेकिन दुनिया भर में होने वाले सूचना तन्त्र के बदलावों और वैज्ञानिक शोधों से जनता को मिलने वाले लाभों के साईड इफेक्ट्स हिमाचल में भी देखने में आ रहे हैं। जिसका असर हिमाचल जैसे सुन्दर और शान्त प्रदेश में भी कई रूपों में अनुभव हो रहा है। जिनमें नशा सबसे भयंकर सामाजिक बुराई के रूप्प में सामने आ रहा है। अब आए दिन समाचार पत्रों में नशे से पीड़ित युवकों या नशा के साथ पकड़े गए युवकों के चित्र सहित लम्बे-लम्बे समाचार या लेख पढ़ने को मिल रहे हैं। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि हिमाचल में किस कद्र नशे का कारोबार फैल चुका है। पुलिस कार्यवाही में अनेकों नशा करने वांले और इसका व्यापार करने वाले लोग पकड़े जाते हैं, जिनमें अधिकांश युवा होते हैं। नशाखोरी समाज में सबसे बड़ा कलंक है। नशा करने वाला बुराई की किसी भी सीमा तक जा सकता है। शुरू-शुरू में वह हल्की-फुल्की चोरी-चकारी हत्या करने का दु:साहस करता है। पुलिस द्वारा पकड़े गए अनेक आरोपियों ने यह स्वीकारा है कि नशापूर्ति के लिए उन्होंने अमुक कुकृत्य किया है।

नशा निवारण के लिए सरकारी तौर पर और सामाजिक संस्थाओं द्वारा भी अनेकों नशा मुक्ति केन्द्र चलाए जा रहे हैं। परन्तु बावजूद इसके नशावृति बढ़ती ही जा रही है। नशे का सबसे ज्यादा प्रभावित युवा वर्ग है और यह पारिवारिक, सामाजिक दृष्टि से बहुत चिन्तनीय पहलू है क्योंकि अंतत: इन सब चीजों का दुष्परिणाम देश को भुगतना पड़ता है। जिस देश की युवापीढ़ी नशे की लत से पीड़ित हो वह देश आन्तरिक और बाह्य तौर पर कितना सुरक्षित होगा। साथ ही उस देश की सभ्यता, संस्कृति और संस्कार कैसे बच पाएंगे। सबसे ज्यादा युवा आबादी वाला देश भारत सब हाथों को काम दे पाने में अभी तक कामयाब नहीं हो पाया है। बेरोजगार युवाओं का मनोबल भी कमजोर हो जाता है और यही कमजोरी युवा को नशे में धकेल देती है। क्योंकि ऐसी कमजोरियों का लाभ उठाने वाली असामाजिक शक्तियां चहुँओर घात लगाए बैठी रहती हैं। छोटे परिवारों की बजह भी बच्चों के बिगड़ने में मदद कर रही है। क्योंकि अकेले बच्चे क्या कर रहे हैं, उन पर किसी की नजर नहीं है।

समाज में बढ़ती भौतिकता और भोगवाद की प्रवृति आज के मानव को लालची और महत्वाकांक्षी बनाने में सहायक हो रही है। प्रतिस्पर्धा और सब कुछ पा लेने की सोच व्यक्ति की शान्ति को भंग कर रही है और अन्तत: शायद कमजोर मन वाला थका-हारा व्यक्ति नशे की चपेट में चला जाता है। नशे का आदि व्यक्ति एक सीमा के बाद निराश और हताश हो जाता है अन्तत: वह आत्महत्या जैसा घृणित कार्य भी कर बैठता है।

नशावृति को रोकने के लिए सरकार को तो आगे आना ही है लेकिन समाज और परिवार तथा विशेषत: शिक्षण संस्थान सभी को अपनी जिम्मेदारी निभानी पड़ेगी। नशे के कारोबार में लगे लोगों के साथ वही व्यवहार होना चाहिए जो एक आतंकी के साथ किया जाता है क्योंकि नशा भी आतंक की तरह ही फैल रहा है। ❖

युवाओं में फैलते नशे के कातिल इरादे

-प्रताप सिंह पटियाल

दुनिया में परमाणु बम की मार झेल चुके मात्र छोटे से देश जापान ने अपनी अर्थव्यवस्था और टेक्नालॉजी से पूरी दुनिया को प्रभावित किया है, वहीं भारत में दशकों से चले आ रहे आतंक को हमारे सुरक्षा बलों द्वारा करारा जबाव देकर उससे निपटा जा रहा है। मगर किसी भी देश को कमजोर करने के लिए वहां के युवाओं को नशे की लत में फंसा देने से मंसूबे पूरे हो जाते हैं। भारत में आतंक के साथ-साथ नशे के नेटवर्क को फैलाने के लिए चार युद्धों में शर्मनाक हार का सामना कर चुका पड़ोसी पाकिस्तान अब कई तरह के हथकंडे अपना कर भारत को खंडित करने का सपना देख रहा है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय सीमा पर सुरक्षा बलों द्वारा कई ड्रग तस्करों को गिरफ्तार किया जाता है या वे मुठभेड़ों में मारे जाते हैं, मगर पड़ोसी मुल्क अब इन चीजों को अपनी सरकारी नीति का हिस्सा बना चुका है।

नशे के कारोबार के लिए नियंत्रण रेखा पर होने वाले क्रॉस एलओसी ट्रेड पर कई सवाल खड़े हो चुके हैं, मगर अब ड्रग तस्करों से देश का कोई भी राज्य अछूता नहीं रहा है। एक बात तो साफ है कि जब हमारे देश की सीमाएं पाकिस्तान और चीन जैसे देशों से लगती हैं तो ऐसे देशों से निपटने के लिए हमें अपनी सेना को हरदम युवा ही रखना पड़ेगा और इसके लिए युवा शक्ति की सबसे ज्यादा जरूरत भारतीय सेना और दूसरे सुरक्षा बलों को है। चूंकि मामला सीधा राष्ट्र रक्षा से जुड़ा है और इसके लिए हर साल हजारों की संख्या में युवाओं का चयन हमारे सुरक्षा बलों के लिए किया जाता है। मगर चिंताजनक पहलू यह है कि जिन युवाओं के कंधों पर राष्ट्र निर्माण का दायित्व है, जो देश का भविष्य है, वही युवा ड्रग माफिया के नेटवर्क में आकर लगातार अनेकों तरह के संवेदनशील नशे के दलदल में धंसते जा रहे हैं और अब इन नशा माफियाओं के निशाने पर ज्यादातर शिक्षण संस्थान हैं। हमारे देश की मौजूदा जनसंख्या में युवाओं की संख्या आधे से अधिक है।

जहां तक हिमाचल का सवाल है तो देवभूमि की पहचान वाला राज्य भी इन नशा माफियाओं के मकड़जाल में आकर देवभूमि से अपराध भूमि बन रहा है, जिसके लिए माननीय हाई कोर्ट की तरफ से भी चिंता व्यक्त की जा चुकी है। देवभूमि में अवैध तरीके से पांव पसार चुके इन नशीले पदार्थों के धंधे के लिए बाहरी राज्यों के लोगों की भूमिका को भी नहीं नकारा जा सकता, क्योंकि राज्य की पुलिस के एंटी नारकोटिक्स विंग के माधयम से मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ चलाई जा रही मुहिम में पकड़े गए लोगों में बाहरी राज्यों के साथ विदेशी भी शामिल हैं, जो यहां तक नशे की खेप को पहुंचाते हैं। नशे के कारण ही यहां अपराधों में इजाफा हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ के मादक द्रव्य आयोग द्वारा अपने 52वें सत्र में नशीले पदार्थों के खिलाफ अपनी प्रतिबद्धता की घोषणा भी की जा चुकी है, जिसमें 130 देशों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था। छात्रों को स्कूली शिक्षा पाठ्यक्रम में मादक पदार्थों के दुष्परिणामों के बारे में जागरूक करवाया जाना जरूरी है, ताकि युवा अपनी योग्यता और क्षमता के बल पर देश की उन्नति में अपना योगदान दे सकें और सरकार को भी इस समस्या से निपटने के लिए बनाई गई नीति को कठोर कानून के साथ धरातल पर उतारने के लिए और सक्रियता लानी होगी। इस बुराई से निपटने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान देना होगा, ताकि अंधकार की तरफ जा रहे भविष्य को मादक पदार्थों के व्यसन से निकाला जा सके और नशे को एक बड़ी सामाजिक समस्या बनने से रोका जा सके। तभी हमारी युवा पीढ़ी को बचाया जा सकेगा और देश की तरक्की में उसका योगदान सुनिश्चित हो सकेगा। ❖

नशावृत्ति पर नकेल आवश्यक

-डा. मीनाक्षी सूद

किसी भी समय समाज में किसी भी प्रकार के नशा का सेवन होना मानवोचित नहीं ठहराया जा सकता है। कोई भी नशा मनुष्य के मन-मस्तिष्क और स्वास्थ्य के नशा ही कारण बनता है। मनुष्य अपने जीवन को बचाने या बिगाड़ने में स्वयं जिम्मेवार है। लेकिन किसी प्रकार के दुर्व्यसन के सेवन से वह परिवार और समाज में विकृति फैलाने का हकदार नहीं हो जाता। किसी भी तरह का नशा करने वाला व्यक्ति समाज के हितैषी कभी नहीं हो सकता। नशावृति शत-प्रतिशत अक्षम्य अपराध की श्रेणी में आनी चाहिए। नशा सेवन से मानव, दानव का रूप धारण कर लेता है उसकी मानसिक और शारीरिक शक्ति कमजोर पड़ जाती है, अन्ततः वह अकाल मृत्यु को प्राप्त होता है।

हमारा पड़ोसी प्रान्त पंजाब नशा रूपी राक्षस की मार झेल चुका है। लेकिन अब वह राक्षस देवभूमि हिमाचल में अपने पांव पसार चुका है। आए दिन समाचारों में नशावृत्ति में संलिप्त युवाओं से सम्बन्धित समाचार पढ़ने को मिलते हैं। देश का भविष्य, युवा जिसे अपनी शारीरिक और मानसिक शक्ति से देश और समाज को दिशा देंने का काम करना चाहिए, वह खुद ही पराश्रित और मलिन मुख लिए विकृतियों का पुतला बनने की ओर अग्रसर है। वैसे युवा देश और समाज के काम न आकर उल्टा उस पर भार बन रहे हैं। इस सामाजिक बीमारी को दूर भगाने के लिए सारे समाज और सत्ता तथा शासन को एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता है।

वर्तमान समय में हमारे समाज ने आधुनिकता का आडम्बर अपना लिया है। वह हर क्षेत्र में एकदम से स्पष्ट दिख जाती है। कोई भी मनुष्य जैसा है वैसा स्वयं में दिखना नहीं चाहता। वास्तविकता और आडम्बर में बहुत ही झीना पर्दा होता है। पुराने समय में विवाह शादी जैसे समारोह में कोई व्यक्ति लुक-छिप कर यदि कोई नशा कर भी लेता था तो भी उसे अपमान और अकेलापन ही झेलना पड़ता था। समय बदला और समाज में जब से आधुनिकता का भूत सवार हुआ है, लोग खुद नशा परोसने की विशेष व्यवस्था करते हैं और तो और आजकल अपने नये घरों में ही नशीला पदार्थ रखने के लिए विशेष व्यवस्था कर ली जाती है। कहां तो पुराने समय में घर के बड़े बुजुर्ग घर के पास तक नशीला पदार्थ फटकने तक नहीं देते थे। परन्तु आज सब उल्टा-पुल्टा हो गया है। आज आवश्यकता है अपने घर से इस बुराई को जड़ से उखाड़ फैंकने की। परिवार में फिर से संस्कारशील वातावरण तैयार करने की। विद्यालयों, महाविद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को बड़ों के सान्निध्य में रखने की और अपने आस-पड़ोस में क्या घट रहा है, कौन आ-जा रहा है, अनजान लोगों पर नजर रखने और शक होने पर तुरन्त पुलिस को सूचना देने की। ❖

With Best Compliments from:

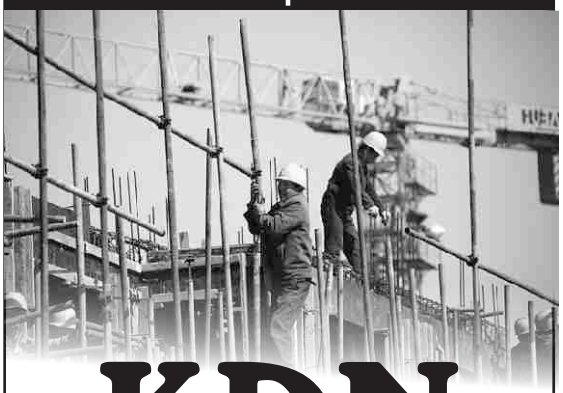

KDN
Infrastructure
Private Limited
Teh. Sundernagar
Distt. Mandi

सिक्ख दंगे के दोषियों को मिले सजा

पंजाब प्रांत के संघचालक स. बृजभूषण सिंह बेदी ने कहा कि पीड़ितों को पूरा न्याय उस समय मिलेगा, जब 1984 के दंगों के आरोपियों के साथ-साथ इनको रोकने की जिम्मेवारी में असफल रहे प्रशासन तंत्र, राजनीति तंत्र के दोषियों को सजा मिलेगी। प्रेस को जारी विज्ञप्ति में स. बृजभूषण सिंह बेदी ने कहा कि सिक्ख दंगों के दोषी सज्जन कुमार को उम्रकैद की सजा सुनाया जाना स्वागत योग्य है, लेकिन यह पीड़ित समाज के जख्मों पर केवल मरहम लगाए जाने जैसा है। बड़े षडयंत्रकारी अभी भी पर्दे के पीछे हैं। पीड़ितों को पूरा न्याय तब मिलेगा, जब इन आरोपियों के साथ दंगों की साजिश रचने वालों को भी सजा मिले।

संघ के प्रांत संघचालक स. बेदी ने कहा कि दंगों के दौरान न केवल हजारों निर्दोष लोग मारे गए और करोड़ों की संपत्ति स्वाह हुई, बल्कि दुनिया में भारत की छवि को भारी धक्का लगा। देश विरोधी ताकतों के हाथों में हमारे युवाओं को गुमराह करने का बहुत बड़ा हथियार इन दंगों ने थमा दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें पूर्ण विश्वास है कि इस नरसंहार के सभी दोषी पकड़े जाएंगे और उन्हें कठोरतम सजा दी जाएगी।उन्होंने क्षोभ जताया कि पिछले 34 सालों से सिक्ख समाज न्याय पाने के लिए दर-दर की ठोकरें खाता रहा और सत्ताधीश पीड़ितों को न्याय दिलाने की बजाय आरोपियों को ही बचाने में व्यस्त रहे।इन दंगों की साजिश रचने वाले सूत्रधार और बचाने वाले भी जल्द ही कानून के दायरे में आएं और उन्हें सजा मिले, तभी सिक्ख समुदाय को पूरा न्याय मिलेगा। ❖

सरस्वती विद्या मन्दिर टिक्करी

हिमाचल शिक्षा समिति द्वारा संचालित एवं विद्या भारती से सम्बद्ध प्राथमिक स0वि0म0 टिक्करी त0 चौपाल, जि0 शिमला के दूरस्थ क्षेत्र व उतराखण्ड की सीमा से सटा है। विद्या मन्दिर टिक्करी ने अपना 18वां वार्षिक एवं परितोषिक वितरण समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाया। कार्यक्रम की शुरूआत चौपाल के विधायक बलवीर वर्मा व सेवा निवृत्त राज्य संस्कृत अधिकारी उच्चतर शिक्षा निदेशालय शिमला कुमार सिंह द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर हुई। कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती वन्दना से किया गया। प्रधानाचार्य देवेन्द्र शर्मा ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। मुख्यातिथि ने बच्चों को नशे से दूर रहने के बारे में अपील की तथा विद्यालय के लिए अपनी ऐच्छिक निधि से 31,000 रू तथा दो कमरे बनाने की घोषणा भी की।

अध्यक्ष कुमार सिंह सिसोदिया ने भी अपने विचार रखे तथा विद्यालय के लिए सात विश्वा भूमि दान की तथा अपनी ऐच्छिक निधि से 5000 रू की राशि प्रदान की। इस अवसर पर संकुल प्रमुख लोकिन्द्र दत शर्मा ने लोगों को हि0शि0समिति व विद्या भारती से सम्बन्ध जानकारी दी। कार्यक्रम में विशेष अतिथि लच्छमी रूपटा व सतीश चौहान बंटी ने 11,000-11,000 रू की राशि प्रदान की। इस अवसर पर कार्यक्रम में उपस्थित श्रवण सिंह सिसोदिया सेवा निवृत संस्कृत अध्यापक ने विद्यालय भवन के निए 1,00,000 रू का चैक भेंट किया। कार्यक्रम में हिमाचल शिक्षा समिति के सदस्य एवं जिला शिमला के उपाध्यक्ष बलवन्त रावत जिला अध्यक्ष सैन राम, प्रधानाचार्य समोली कुलदीप केस्टा, निक्कम सिंह, अमर सिह सिंगटा, विजय जुस्टा, संकुल अध्यक्ष श्याम ढमाल, मस्तराम आचार्य, प्रबंधक जगत सिंह सिसोदिया, पत्रकार जोगीराम चौहान विशेष रूप से उपस्थित रहे। ❖

डी.बी. पब्लिक स्कूल कालूझंडा का वार्षिकोत्सव संपन्न

डी.बी. पब्लिक स्कूल कालूझन्डा ने वार्षिक उत्सव तथा पारितोषिक वितरण समारोह धूमधाम के साथ स्कूल प्रांगण में मनाया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में पूर्व बीडीसी चेयरमैन बलविन्द्र ठाकुर उपस्थित हुए। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हमें स्कूल शिक्षा के साथ-साथ अच्छे इंसान पहले बनना है, क्योंकि एक अच्छा इन्सान ही स्वच्छ व समृद्व समाज का निर्माण कर सकता है। उन्होंने कहा कि आजकल के युवा गलत संगत में पड़कर नशे जैसी गलत आदतें सीख लेते हैं जोकि अपना व अपने परिवार का ही नहीं बल्कि समाज का भी नुकसान करते हैं। इसलिए हमें नशे जैसी आदतों से दूर रहना चाहिए।

इस अवसर पर बच्चों ने रंग बिरंगे सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये। मुख्यातिथि ने शिक्षा व खेलकूद में अव्वल आये हुए विद्यार्थीयों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के अन्त में स्कूल प्रधानाचार्य कमल चन्देल ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी।

इस अवसर पर मुख्यअतिथि बलविन्द्र ठाकुर व विशिष्ठ अतिथि देसराज ने अपनी स्वैच्छिक निधि से इक्यावन सौ रूपये स्कूल प्रबन्धन समिति को नकद देने की घोषणा की। कार्यक्रम में राजीव नेगी, कुलदीप, सिकंदर बंसल, सन्त गिरी, सोनू शर्मा, गुरमीत चौधरी, दीप आर्य, जयपाल चन्देल, रघुवीर चौहान आदि अनेक गणमान्य लोगों के साथ अभिभवाक भी मौजूद रहे। ❖

With Best
Compliments from:

Sweet Basil
Hotel & Restaurant
Dadour (NerChowk),
Teh. Balh Distt. Mandi HP

With Best Compliments from:

No.1 Fruit Trade in HP 2015-16-17

AFC Fruit World
Fruits & Commission Agents
Trade Mark Shop No.
AFC/15
Prop. Anup Pal Chauhan
Shop no. 15, New Modern Fruit &
Vegetable Market, Prala, THEOG (HP)
98161-48241, 88944-98241
Email: afcshopno50@gmail.com

अवैध ढंग से पैसा कमाने में लगे लोग

नशे का अवैध व्यापार जिस तरीके से चलाया जा रहा है उससे आने वाले समय में समस्याएं और भी गंभीर हो जाएंगी। नशे का प्रभाव एक व्यक्ति पर न होकर परिवार, समाज और राष्ट्र पर पड़ता है। नशेड़ी व्यक्ति समाज विरोधी व्यवहार को जन्म देता है। वह समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है। नशे का आदि अपराधों से भी सहज ही जुड़ता जाता है। नशे के आदि युवक-युवतियां नैतिक और सामाजिक मूल्यों से समझौता करने को तैयार हो जाते हैं। समाज में ऐसे व्यक्तियों की सम्पत्ति की भी जांच होनी चाहिए जिनकी एकदम से दिनों दिन बढ़ती जाती है। उस सम्पत्ति को कल्याण कार्यों में प्रयुक्त किया जाना चाहिए। ❖

छात्रों को नशे के जाल से छुड़ाएगी एंटी ड्रग फोर्स

हिमाचल के युवाओं को नशे की प्रवृत्ति से छुटकारा दिलाने का बीड़ा शिक्षा विभाग ने उठाया है। प्रदेश के लगभग सभी कॉलेजों में नशे में संलिप्त छात्रों की काउंसिलिंग करने के लिए एंटी ड्रग फोर्स को स्थापित कर दिया गया है। हर कॉलेज के प्रधानाचार्य की अध्यक्षता में यह फोर्स कार्य करेगी। विभाग की ओर से निर्देश जारी किए गए हैं कि नशे को लेकर शिक्षण संस्थानों में बनाई गई ये फोर्स छात्रों को बताए कि नशे से कैसे पीछा छुड़वाया जा सकता है। सभी कॉलेजों में स्थापित किए गए एंटी ड्रग फोर्स नशा मुक्ति केन्द्र की तरह कार्य करेंगी। रोजाना छात्रों को नशे से छुटकारा दिलवाने के लिए पाठ पढ़ाया जाएगा। खास बात यह है कि जो छात्र नशे के जाल में फंसे हैं, उन्हें नशे से जुड़ी जागरूकता रैलियों में भी शामिल किया जाएगा। कॉलेजों में एंटी ड्रग फोर्स का गठन राज्य सरकार के निर्देशों के अनुसार किया गया है। कॉलेजों में कितने छात्रों को नशे की लत से इस फोर्स से छुटकारा दिलवाया, यह रिपोर्ट निदेशालय को भेजनी होगी। इसके साथ ही किस आधार व योजना के अनुसार एंटी ड्रग फोर्स कार्य कर रही है, यह रिपोर्ट भी सौंपनी होगी। जानकारी के अनुसार कॉलेजों में स्थापित की गई एंटी ड्रग फोर्स गुप्त रूप से छात्र-छात्राओं पर नजर रखेगी। सूत्रों की मानें तो शिक्षा विभाग के पास पहुंची एक रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ है कि कॉलेज व स्कूलों के छात्र ही नशे की लत में सबसे ज्यादा फंसे हैं। इन छात्रों को नशे से छुड़वाने के लिए ही राज्य सरकार ने स्कूल-कॉलेजों में एंटी ड्रग फोर्स स्थापित करने के निर्देश दिए थे। पहली बार स्थापित की गई यह फोर्स कॉलेजों में नशे में संलिप्त छात्राओं की भी काउंसिलिंग करेगी। फोर्स में कॉलेजों से जुड़े शिक्षाविद् शामिल होंगे। बता दें कि नशाखोरी को लेकर प्रदेश सरकार ने शिक्षा विभाग से सहयोग मांगा था। अब शिक्षण संस्थानों में स्थापित की गई ये फोर्स गुप्त रूप से यह भी चैक करेंगी कि छात्रों को नशा कौन सप्लाई कर रहा है। इस बारे में शिक्षण संस्थान शिक्षा निदेशालय को रिपोर्ट तलब करेंगे। ❖

पहाड़ों पर मौत का नशा चरस के बाद चिट्टा

प्रदेश की राजधानी शिमला में नशे का ग्राफ बढ़ रहा है। वर्ष 2018 में शिमला के कुछ युवाओं को नशे ने अपनी गिरफ्त में ले लिया। हालांकि कुछ वर्षों से पूरे प्रदेश सहित शिमला में चरस, अफीम सहित अन्य नशे के कारोबार में सैकड़ों आरोपियों को पुलिस ने दबोचा है, लेकिन साल के मध्य महीने में एक नया नशा चिट्टा ने भी पांव पसार दिए। राजधनी ही नहीं, बल्कि ऊपरी शिमला के कुछ युवा भी इसकी चपेट में हैं। चंद महीनों में ही शिमला में चिट्टा नशेड़ियों की पसंद बन गया है। अब तक सौ से अधिक युवाओं को चिट्टे के साथ हिरासत में लिया गया है, मगर इसके बावजूद बाहरी राज्यों से शिमला के लिए ऐसे नशे की सप्लाई हो रही है। इसके साथ-साथ चरस, अफीम और गांजा के माफिया पर नकेल कसने के लिए पुलिस ने पूरे साल मुहिम भी छेड़ी। बरसात के दौरान पुलिस सहित अन्य एनजीओ ने भांग की खेती को नष्ट करने के लिए विशेष अभियान शुरू कर दिया था। गौरतलब है कि इन दिनों भी चिट्टे के नशे में शिमला के कई युवा संलिप्त हैं। बताया गया कि चिट्टे के माफिया अधिकांश पड़ोसी राज्यों से हैं। सबसे महंगे नशे का प्रयोग करने वाले युवा अपने घरों से चोरी कर उसे पूरा करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। हाल ही में नशे के लिए एक युवक ने तो अपनी मां के आभूषण और नकदी चोरी की। हैरानी की बात है कि यह युवा नाबालिग है। स्कूलों में नशे के खिलाफ पाठ पढ़ाए जाने के बावजूद माफिया को दबोचने में पुलिस अब तक नाकाम रही है। पुलिस ने शिमला में तीन युवाओं को चिट्टे के साथ हिरासत में लिया है। ❖

भारत जैसा सहिष्णु देश पूरी सृष्टि में नहीं

भारत जैसा सहिष्णु देश पूरी सृष्टि में कहीं भी नहीं मिलेगा। इंदौर लिटरेचर फेस्टिवल में 'साहित्य का महासमर' नामक सत्र में कोहली ने कहा कि यह देश तो सब कुछ देखते हुए और झेलते हुए भी चल रहा है। यहां से हमने किसी को निकाला नहीं। इस सत्र में प्रो. दुबे ने नरेन्द्र कोहली से कई सवाल पूछे। उन्होंने शिव महिम्नस्तोत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि हमने उसके अर्थ की तरह ही सबको अपने में समाहित किया है। स्तोत्र में है कि हे! प्रभु पानी जहां कहीं भी हो अंतत: समुद्र में मिलता है, उसी तरह सबको हमारा देश भी अपने में शामिल कर लेता है। कोहली ने कहा कि साहित्य ने फिल्मों में योगदान दिया या नहीं यह अलग बात है, लेकिन फिल्मों ने साहित्य को नुकसान जरूर पहुंचाया है। ❖

भारत में कैसे रह सकते हैं पाकिस्तानियों के वंशज?

जम्मू-कश्मीर पुनर्वास कानून को चुनौती देने वाली याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई की। मामले की सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस रंजन गोगोई ने पूछा है कि आखिर विभाजन के दौरान पाकिस्तान जा चुके लोगों के वंशजों को कैसे भारत में फिर से रहने की इजाजत दी जा सकती है। कोर्ट ने राज्य सरकार से सवाल किया कि जम्मू कश्मीर में पुनर्वास के लिए अभी तक कितने लोगों ने आवेदन किया है।

कोर्ट ने कहा कि यह कानून विभाजन के दौरान 1947-1954 के बीच पाकिस्तान जा चुके लोगों को हिंदुस्तान में पुनर्वास की इजाजत देता है। इसके खिलाफ जम्मू-कश्मीर पैंथर पार्टी की ओर से दायर याचिका में कहा गया है कि ये कानून असंवैधानिक और मनमाना है, इसके चलते राज्य की सुरक्षा को खतरा हो गया है। केंद्र सरकार ने भी याचिकाकर्ता का समर्थन किया है। कोर्ट में सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि सरकार पहले ही कोर्ट में हलफनामा दायर कर यह साफ कर चुकी है कि वह विभाजन के दौरान सरहद पार गए लोगों की वापसी के पक्ष में नहीं है। वहीं, जम्मू-कश्मीर सरकार ने सुनवाई टालने की मांग की। राज्य सरकार का कहना है कि जब तक सुप्रीम कोर्ट आर्टिकल 35ए को चुनौती देने वाली याचिका पर फैसला नहीं दे देता, तब तक इस पर विचार न हो। ❖

गौरी नाम से सुधरेगी पहाड़ी गाय की नस्ल

गौरी नाम से पहाड़ी गाय की नस्ल में सुधार कर इसे नई पहचान दिलाई जाएगी। पहाड़ी गाय को पहचान दिलाने और वांशिकी निर्धारित करने के लिए राष्ट्रीय पशु अनुवांशिकी संस्थान के पास प्रस्ताव भेजा गया है। इसके अलावा प्रदेश में बड़ी गोशाला का निर्माण कर गो विज्ञान केन्द्र स्थापित किए जाएंगे, जिनमें नस्ल में सुधार के लिए शोध किए जाएंगे। साथ ही गाय के गोबर व गोमूत्र को वैज्ञानिक तरीके से प्रयोग में लाया जाएगा। प्रदेश के हर जिला में एक से तीन गो सेंक्चुरी बनाई जाएंगी। साथ ही बछड़ी ही पैदा किए जाने के लिए शार्टड सीमनस्ट्रो लाने का प्रयास किया जा रहा है और प्रदेश में प्रयोगशाला भी स्थापित की जाएगी।

शीतकालीन सत्र में गोमाता को राष्ट्र माता बनाने का संकल्प पारित कर केन्द्र सरकार को भेजा गया। विधायक अनिरूद्ध सिंह ने नियम-101 के तहत संकल्प चर्चा के लिए रखा, जिस पर सदन में सुरेश कश्यप, किशोरी लाल, कमलेश कुमारी, लखविंद्र सिंह राणा, हीरालाल, विक्रमादित्य सिंह, राजेश ठाकुर और रमेश धवाला ने चर्चा में भाग लेते हुए अपने विचार रखे। संकल्प चर्चा का उतर देते हुए पंचायती राज मंत्री वीरेंद्र कंवर ने कहा कि राज्य में 2012 की पशु गणना के अनुसार गाय की संख्या 21.49 लाख है, जिसमें 11.65 लाख देसी और 9.84 लाख विदेशी या संकर नस्ल की हैं। उन्होंने कहा कि गो माता को राष्ट्रीय माता घोषित करने के लिए संकल्प पास कर केंद्र सरकार को भेजा गया है। प्रदेश में गो सेवा आयोग की स्थापना की जाएगी। ❖ **दिव्य हिमाचल**

ऊना जिले की लोहड़ी

-मीनू जसवाल

भारत देश अपनी लोक संस्कृति और त्यौहारों के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। विविधता में एकता का प्रतीक है भारत। हर प्रान्त के अपने कुछ त्यौहार हैं। त्यौहार प्रकृत्ति में होने वाले परिवर्तन के साथ-साथ मनाए जाते हैं जैसे लोहड़ी के विषय में कहा जाता है कि 'आई लोहड़ी गया स्याल कोढ़ी' अर्थात् इस दिन से ठण्ड का प्रकोप कम होना आरम्भ हो जाता है और धीरे-धीरे दिन बढ़ने आरम्भ हो जाते हैं। हिमाचल के ऊना जिले में इस त्यौहार की शान ही निराली है। लोहड़ी का त्यौहार माघ संक्राति के ठीक एक दिन पहले मनाया जाता है। इस त्यौहार को दुल्ला भट्टी के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसके साथ एक ऐतिहासिक कथा अकबर के शासन काल की है। बादशाह अकबर के शासन काल में सुंदरी-मुंदरी नाम की दो अनाथ लड़कियां थी उनका चाचा उनकी शादी न करवाकर उन्हें राजा को भेंट करना चाहता था। दुल्ला भट्टी नाम का एक नेक डाकू था उसने इन दोनों लड़कियों को उनके चाचा के चुंगल से छुड़वाया और उनकी शादी दूसरे स्थान में करवा दी। चूंकि उनकी शादी जंगल में करवाई गई तो दुल्ला डाकू ने जंगल में आग जलाई और वहीं उनके फेरे करवा दिए और लड़कियों की झोली में एक सेर शक्कर डाल कर उनकी विदाई करवाई। ऐसा माना जाता है कि तभी से यह गीत भी गाया जाता है 'सुंदरीए मुंदरीए, तेरे कौन विचारा, दुल्ला भट्टी वाला, दुल्ले ने धी बियाई शेर शक्कर पाई'

अर्थात् डाकू होते हुए भी उसने अपना धर्म निभाया और कन्यादान किया। ऊना जिला पहले पंजाब का ही एक भाग था। सन् 1966 में जब हिमाचल बना तो इसे हिमाचल में मिला लिया गया परन्तु अभी भी इसके रीति-रिवाजों और त्यौहारों में पंजाब की संस्कृति की झलक देखने को मिलती है, नाचना-गाना और ढ़ोल के बिना यह त्यौहार अधूरा सा प्रतीत होता है। जिस घर में पुत्र का जन्म हुआ हो या किसी का विवाह हुआ हो उस घर में इस त्यौहार की शान ही निराली होती है। ढोल की थाप पर नृत्य के साथ मक्की के दानों को उबाला जाता है तथा तिल-चौली(तिल और चावल) तैयार की जाती है। रात्रि के समय लकड़ियों को इकठ्ठा कर अलाव जलाया जाता है और तिल-चौली की आहुति दी जाती है, और जल भी अर्पित किया जाता है। इसके पश्चात् सभी को रेवड़ी, मूंगफली बांटी जाती है विशेष रूप से साग और मक्की की रोटी भी बनाई जाती है। कई स्थानों में जहां पर अभी भी गन्ने की खेती की जाती है इस दिन गन्ने का रस निकाल कर उसमें चावल मिलाकर मीठा पकवान तैयार किया जाता है। बच्चे लोहड़ी गीत गाते हैं और बड़ों से पैसे लेते हैं। देर रात तक लोहड़ी के त्यौहार को मनाया जाता है। ढोल की थाप पर लोग नाचते हैं। ❖

यहां बनाई जाएंगी गो सेंक्चुरी

प्रदेश के हर जिला में एक और बड़े जिला में दो से तीन गौ सेंक्चुरी बनाई जाएंगी। इसमें ज्वालामुखी के मझीण में 535 कनाल भूमि, ऊना के थानाकलां और जिला सोलन के नालागढ़ में हाडाकुंडी में भूमि चयन कर टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। हमीरपुर के कलवाल और खैरी, ऊना के कृष्णा नगर, गगरेट और कतौड़ कलां, चंबा में सराली, सोलन में दाड़लाघाट, शिमला के सुन्नी और अलधर, मंडी के बल्ह और सरकाघाट तथा बिलासपुर के बल्हसीणा, दधोल, धार टटोह और बरोटा ढबवाल क्षेत्रों में गो-अभ्यारण्य बनाने की प्रक्रिया चल रही है। ❖

चम्बा जिले की लोहड़ी

-निशी ओहरी

यूं तो पूरे भारतवर्ष में लोहड़ी का पर्व धूमधम से मनाया जाता है। लेकिन चम्बा में यह पर्व अपने आप में एक अलग विशेषता लिए हुए है। चम्बा में यह पर्व पौष मास के प्रथम सप्ताह से आरम्भ होकर पूरे माघ चलता रहता है। मकर संक्रान्ति को स्थानीय भाषा में 'माघी' कहा जाता है। इस दिन लोग रावी नदी के तट पर पवित्र स्नान व तुलादान करते हैं। लोग गांव में घर-घर का फेरा लगाकर माश, चावल, घी और पैसे इक्कठे करते हैं। लोग बेटियों व जंवाइयों को अपने घर आमंत्रित करते हैं और दान दक्षिणा करते हैं।

चम्बा में माघी पर्व पर पकाया जाने वाला खिचड़ी विशेष पकवान है। परिवार की महिलाएं सूखे मेवों अखरोट, बादाम, दाख, काजू, छवारों के हार, जंजीरे बनाकर सगे सम्बन्धियों को उपहार स्वरूप भेंट करते हैं। पूरे महीने यहां के युवक युवतियां एवं बुजुर्ग रोजाना मुहल्ले-मुहल्ले में निश्चित स्थान पर एकत्रित होकर दुल्हा भट्ठीवाला हो और घर-घर जाकर लोहड़ी मांगते हैं। वे पैसे, गुड़, तिल की मिठाई व लकड़ी इकठ्ठी करते हैं प्रत्येक चौराहे पर बने छोटे मन्दिर में लकड़ी जलाई जाती है। आग के चारों तरफ घेरा डालकर नगाड़ों की आवाज पर नृत्य करते हैं और जोर-जोर से गीत गाते हैं।

मान्यता है कि सर्दी को दूर करने के लिए तथा चौराहों पर बुरी आत्माओं के प्रभाव को दूर करने के लिए आग जलाई जाती है। किवदंती के अनुसार चम्बा शहर का खाका तांत्रिक धारणा पर बना हुआ है और लोहड़ी का पर्व भी तांत्रिक धरणा पर आधारित है। पं0 सुरानन्द और पं0 रामपति ई0 पूर्व 1558 में राजा गणेश वर्मन के शासन काल में बनारस से आए थे और यहां के राजगुरू नियुक्त हुए थे। चम्बा में पौष महीने के आखिरी तीन दिन बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इन दिनों पहली रात को छोटा जागरा व दूसरी रात को बड़ा जागरा किया जाता है जिसमे वीरमान का आह्वान किया जाता है। चम्बा के मोहल्लों के प्रत्येक चौराहे पर एक छोटी मढ़ियां, मन्दिर बनी हुई हैं जिसमे वीर भान को एक पत्थर के प्रतीक स्वरूप पूजा जाता है। इस प्रकार की छोटी बड़ी असंख्य मढियां स्थापित की गई हैं। जिसमें पत्थर स्वरूप वीर भान एक रक्षक के रूप मे कार्य करते हैं। इन दिनों इन मढियों में जाकर प्रतीक स्वरूप वीरभान को घी, गुड़, रेवड़ी अर्पित किए जाते हैं। लोहड़ी के गीत गाकर खुशियां मनाई जाती हैं। तदोपरान्त सभी पदार्थों को भोग स्वरूप प्रसाद लोगों को बांटा जाता है। ऊंचाई वाली जगह पर स्थित राजा मढ़ी जो सुराड़ा मोहल्ला में स्थित है चम्बा की प्रमुख मढ़ी है। पूरे क्षेत्र के बड़े बुजुर्ग लोहड़ी के अवसर पर यहां जाकर आग जलाते हैं। इस मुख्य मढ़ी से सभी ग्रामीण त्रिशूल के आकार की लकड़ी जिसे मुशाहरा कहा जाता है में आग जलाकर लाते हैं और क्षेत्र की सभी मढ़ियों में स्पर्श करते है। प्राय: दूसरी मढ़ियों के लोग इसका विरोध करते है लेकिन अन्त में जीत राजा मढ़ी की ही होती है।

इसके उपरान्त हाथों में मशाल लिए लोग पूरे चम्बा शहर की परिक्रमा करते हैं और सभी मशालों को लौटकर राजमढ़ी में समर्पित करते हैं। लोहड़ी का त्यौहार लोगों की आस्था व विश्वास का प्रतीक है। हालांकि बदलते हालातों में इतिहास कहीं खो गया है। त्यौहारों के प्रति नई पीढ़ी की आस्था में परिवर्तन आया है। स्वतन्त्रता के उपरान्त बाहर के राज्यों से आकर यहां लोग बसे हैं जिससे पंजाबी संस्कृति के लोहड़ी को प्रभावित किया है। प्राचीन संस्कृत्तिको पुन: संरक्षण की आवश्यकता है। जिसमें साहित्य की अहम भूमिका है। ❖

स्वतंत्रता बलिदान चाहती है- नेताजी सुभाषचंद्र बोस

सुभाषचंद्र जानकीनाथ बोस, जन्म 23 जनवरी 1897, जन्मस्थान कटक ओड़िसा पिता जानकीनाथ, माता प्रभावती देवी, शिक्षा 1919 में बी.ए. 1920 में आई.सी.एस. परीक्षा उत्तीर्ण। सुभाष चंद्रबोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। जिनकी निडर देशभक्ति ने उन्हें देश का हीरो बनाया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिन्द फौज का गठन किया था। बाद में सम्माननीय नेताजी ने पहले जर्मनी की सहायता लेते हुए जर्मन में ही विशेष भारतीय सैनिक कार्यालय की स्थापना बर्लिन में 1942 के प्रारम्भ में की, जिसका 1990 में भी उपयोग किया गया था। शुरू में 1920 के अंत ने बोस राष्ट्रीय युवा कांग्रेस के उग्र नेता थे एवं 1938 और 1939 को वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने। लेकिन बाद में कुछ समय बाद ही 1939 में उन्हें महात्मा गांधी से चल से विवाद के कारण अपने पद को छोडना पड़ा।

अडोल्फ हिटलर उसी समय 1942 के अंत में बोस से मिले थे। और उन्होंने भी सुभाष चंद्र बोस को दक्षिणी एशिया जाने की सलाह दी और पनडुब्बी लेने की भी सलाह दी। बोस ने अच्छी तरह से एक्सिस ताकत को जान लिया था और खेदसूचक ढंग से वह ज्यादा देर तक नहीं टिक पाई। फरवरी 1943 में सुभाषचंद्र बोस जर्मन पनडुब्बियों पर पहुचें। मैडागास्कर में, उन्हें जापानी पनडुब्बी में स्थानांतरित किया गया। जहां मई 1943 में वे जापानी स्थान सुमात्रा में उतरे। जापानियों की सहायता से ही सुभाष चंद्रबोस ने इंडियन नेशनल आर्मी का पुनर्निर्माण किया। जिसमे ब्रिटिश इंडियन आर्मी के भारतीय सैनिक भी शामिल थे। जिन्होंने सिंगापुर युद्धमें महान कार्य किया था। इस तरह बोस के आने से मलैया और सिंगापुर में भारतीय नागरिकों की संख्या बढ़ने लगी। सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में जापानी भारतीय सरकार को विभिन्न क्षेत्रों में सहायता करने के लिये राजी हुए। जैसे की उन्होंने बर्मा की सहायता की थी। सुभाष चंद्र बोस अच्छी तरह से अपनी सेना का नेतृत्व कर रहे थे – उनमे काफी करिश्माई ताकत समायी थी। इसी के चलते उन्होंने प्रसिद्ध भारतीय नारे 'जय हिन्द' की घोषणा की। और उसे अपनी आर्मी का नारा बनाया। उनके नेतृत्व में निर्मित इंडियन नेशनल आर्मी एकता और समाजसेवा की भावना से बनी थी। उनकी सेना में भेदभाव और धर्मभेद की जरा भी भावना नहीं थी। इसे देखते हुए जापानियों ने बोस को अकुशल सैनिक बताया। और इसी वजह से वे अपनी आर्मी को ज्यादा समय तक नहीं टिका पाये। 1944 के अंत में और 1945 के प्रारम्भ में ब्रिटिश इंडियन आर्मी पहले तो रुकी थी लेकिन बाद में उन्होंने पुनः भारत पर आर्कमण किया। जिसमे लगभग आधी जापानी शक्ति और इंडियन नेशनल आर्मी में शामिल आधे जापानी सैनिक मारे गए। रंगून के 'जुबली हॉल' में सुभाष चंद्र बोस द्वारा दिया गया वह भाषण सदैव के लिए इतिहास के पन्नों में अंकित हो गया। जिसमें उन्होंने कहा था कि- 'स्वतंत्रता बलिदान चाहती है। आपने आजादी के लिए बहुत त्याग किया है। किन्तु अभी प्राणों की आहुति देना शेष है।

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।' इस वाक्य के जवाब में नौजवानों ने कहा – 'हम अपना खून देंगे' उन्होंने आईएनए को 'दिल्ली चलो' का नारा भी दिया। सुभाष भारतीयता की पहचान ही बन गए थे और भारतीय युवक आज भी उनसे प्रेरणा ग्रहण करते हैं। वे भारत की अमूल्य निधि थे। 'जय हिन्द' का नारा और अभिवादन उन्हीं की देन है। सुभाष चंद्रबोस के ये घोषवाक्य आज भी हमें रोमांचित करते है। यही एक वाक्य सिद्ध करता है कि जिस व्यक्तित्व ने इसे देश हित में सबके सामने रखा वह किस जीवट का व्यक्ति होगा।

'इंडियन नेशनल आर्मी' के संस्थापक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु पर इतने वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद भी रहस्य छाया हुआ है। सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु हवाई दुर्घटना में मानी जाती है। समय गुजरने के साथ ही भारत में भी अधिकांश लोग ये मानते हैं कि नेताजी की मौत ताईपे में विमान हादसे में हुई। कहा जाता है की 18 अगस्त 1945 को यह हादसा ताइवान में हुआ था। लेकिन फिर भी बहुत से लोगों को इस बात पर भरोसा नहीं था। ❖

पत्थरबाज सा विपक्ष

- राकेश सैन

परीक्षण के दौरान 'ट्रेन 18' पर पथराव, रेलवे ने तोड़फोड़ से दूर रहने की अपील की

वीरवार को तीव्रगामी गाड़ी 'ट्रेन-18' के नई दिल्ली और आगरा के बीच हुए ट्रायल के दौरान कुछ लोगों ने पत्थरबाजी कर शीशे तोड़ दिए। स्वभाविक है कि इसके पीछे सिवाय शरारत या अनावश्यक विरोध या फिर मानसिक विकृति के और कोई कारण नहीं हो सकता। लगता है कि इसी पत्थरबाज सी मानसिकता का शिकार विपक्ष भी हो चुका है। सरकार के हर निर्णय पर पत्थरबाजी करने को मानों विपक्ष ने अपना संवैधानिक दायित्व समझ लिया है और इतना भी ध्यान नहीं रखा जा रहा कि उनके इस आचरण से देश को कितना नफा-नुक्सान होने जा रहा है। भारत सरकार ने सूचना प्रोद्यौगिकी कानून से संबंधित अधिसूचना 09 जून, 2000 को प्रकाशित की जिसकी धारा 69 में इस बात का जिक्र है कि अगर कोई राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए चुनौती पेश कर रहा है और देश की अखंडता के खिलाफ काम कर रहा है तो सक्षम एजेंसियां उसके कंप्यूटर और डेटा की निगरानी कर सकती हैं। कानून की उपधारा एक में निगरानी के अधिकार किन एजेंसियों को दिए जाएंगे, यह सरकार तय करेगी। उपधारा दो में कोई अधिकार प्राप्त एजेंसी किसी को सुरक्षा से जुड़े मामलों में बुलाती है तो उसे एजेंसियों को सहयोग करना होगा और सारी जानकारियां देनी होंगी। उपधारा तीन में यह स्पष्ट किया गया है कि अगर बुलाया गया व्यक्ति एजेंसियों की मदद नहीं करता है तो वो सजा का अधिकारी होगा। इसमें सात साल तक के जेल का भी प्रावधान है। सरकार ने इस कानून में संशोधन करते हुए दस जांच एजेंसियों को किसी के भी कंप्यूटर की जांच करने का अधिकार दे दिया है। कांग्रेस ने सरकार के आदेश को नागरिकों की निजी आजादी पर सीधा हमला करार दिया और आरोप लगाया कि नरेंद्र मोदी सरकार देश को 'निगरानी राज' एवं 'पुलिस राज' में तब्दील कर रही है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी. चिदंबरम ने कहा कि भारत में ''ऑर्वेलियन शासन कायम होने वाला है।'' देश की राजनीति में अपरिचित यह 'ऑर्वेलियन' शब्द किसी ऐसी राजनीतिक व्यवस्था के बारे में बताने के लिए इस्तेमाल किया जाता है जिसमें सरकार लोगों की जिंदगी के हर हिस्से को नियंत्रित करना चाहती है। प्रसिद्ध साहित्यकार जर्ज ऑर्वेल ने अपने उपन्यास 'नाइनटीन एटी फोर' में इससे मिलती-जुलती स्थिति को चित्रित किया। इन आरोपों के बीच विधि मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि इस प्रकार की निगरानी के प्रावधान करने वाले सूचना प्रौद्योगिकी कानून को कांग्रेस की अगुवाई वाला संप्रग लाया था और नवीनतम आदेश में एजेंसियों को इस प्रकार की निगरानी के लिए नामित करके इसे केवल ज्यादा जवाबदेह बना दिया गया है। विधि मंत्री ने कहा, ''संप्रग ने कानून बनाया था। हमने उसे जवाबदेह बनाया है।'' उन्होंने निजता की चिंता से जुड़े प्रश्नों पर जवाब देते हुए कहा कि सरकार गोपनीयता की रक्षा करेगी लेकिन राष्ट्रीय सुरक्षा से कोई समझौता नहीं हो सकता।

देश में हाल ही में घटित घटनाएं बताती हैं कि सूचना क्रांति विकास की गति बढ़ाने के साथ-साथ देश विरोधियों के हाथों में नया हथियार भी साबित हो रही है। इन्हीं कंप्यूटरों की जांच से ही विगत माह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हत्या के षडयंत्र का खुलासा हो पाया जिसके आरोपी पांच शहरी माओवादी अभी न्यायिक हिरासत में चले आ रहे हैं। दुनिया के लिए नये खतरे के रूप में उभरा आईएस किस तरह सूचना तकनीकी को हथियार बना कर भारतीय युवाओं को भ्रमित कर उनकी भर्ती कर रहा है इसका खुलासा समय-समय पर होता रहा है। आईएस की चंगुल में फंसे युवक बताते रहे हैं कि वे सोशल मीडिया के माध्यम से उनके जाल में फंसे। अभी पंजाब में ही खुलासा हुआ कि पाकिस्तान की गुप्तचर एजेंसी आईएसआई कैसे युवाओं को खालिस्तानी आतंकवाद की भट्ठी में झोंकने की कोशिश कर रही है और सोशल मीडिया के माध्यम से युवाओं के मनों में जहर भरा जा रहा है। विदेश में बैठे खालिस्तानी आका भी इसी के सहारे पंजाब के युवाओं को अपने ही देश व समाज के खिलाफ भड़का रहे हैं। लश्कर व जैश जैसे खतरनाक संगठनों ने जम्मू-कश्मीर के अतिरिक्त पंजाब में सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी पकड़ बना ली है। इस काम में केवल आपराधिक पृष्ठभूमि के लोग ही नहीं बल्कि साधारण युवा

भी संलिप्त पाए गए हैं। अगर सरकार इस कानून के दायरे में अपराधियों के साथ-साथ नए संदिग्धों को भी लाना चाहती है तो कांग्रेस को भला इससे क्या आपत्ति होनी चाहिए। सरकार जब इसका भरोसा दिलवा चुकी है कि सर्वोच्च न्यायालय की भावना व आदेश के अनुरूप इस कानून से नागरिकों के निजता का उल्लंघन नहीं होगा और प्रदेश के मुख्य सचिव के आदेश के बाद ही किसी की जांच होगी तो इससे विपक्ष की चिंता का कोई आधार दिखाई नहीं पड़ता। ठीक ही कहा गया है कि निजता की आड़ में अपराधियों व देश की सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। वैसे भी यह आदेश उस कानून का हिस्सा है जिसे साल 2009 में संयुक्त प्रगतिशील मोर्चा की सरकार ने बनाया था के नियम चार के साथ सूचना प्रोद्यौगिकी अधिनियम 2000 की धारा 69 (1) की शक्तियों का प्रयोग करते हुए सरकार ने दस एजेंसियों के अधिकार में वृद्धि की है। इसका विरोध करते समय पी.चिदंबरम को स्मरण रहना चाहिए कि इसी कानून से उनके कार्यकाल में नीरा राडिया प्रकरण का भंडाफोड़ हुआ और उस समय चिदंबरम ने इसे उचित बताया था। पाठकों को स्मरण होगा कि राडिया टेप विवाद व्यापारिक घरानों के भ्रष्टाचार को उजागर करने वाला एक टेलीफोन पर बातचीत का टेप है जिसमें नीरा राडिया नामक दलाल का कई राजनेताओं, पत्रकारों एवं व्यावसायिक घरानों के महत्वपूर्ण व्यक्तियों से टेलीफोन पर हुई बातचीत है जिसे भारत के आयकर विभाग ने 2008-09 में टेप किया था। नीरा राडिया तत्कालीन संचार मंत्री ए.राजा की परिचित एवं विश्वस्त थी तथा वैष्णवी कम्युनिकेशन्स नामक एक सार्वजनिक सम्बन्ध संस्था का संचालन करती थी। जब कांग्रेस यह कानून लाई तो यह उचित और आज यह एमरजेंसी लगाने वाला कैसे बन गया? आज से लगभग पौने पांच साल पहले साल 2014 में हुए सत्ता परिवर्तन के बाद देखने में आया है कि विपक्ष मुद्दों की गहराई में जाने, सरकार की तथ्यों के आधार पर आलोचना करने, सुझाव देने, संशोधन करवाने की बजाय पत्थरबाजी ही करता आ रहा है। रोचक बात तो यह है कि 1975 में देश में आपातकाल लगाने वाली कांग्रेस पार्टी को सरकार के हर कदम में अघोषित अपातकाल ही दिखाई दे रहा है। विपक्ष पत्थरबाजी की मानसिकता से कब उबरेगा ? उक्त मुद्दे पर सरकार का भी दायित्व बनता है कि वह देश को सुनिश्चित करे कि जांच के अधिक अधिकार मिलने के बाद आम नागरिकों की निजता पर कोई हमला नहीं होगा और नागरिकों को अपने अधिकार की सुरक्षा का मजबूत तंत्र भी उपलब्ध करवाना होगा। ❖

नशे का सप्लायर सिरमौर पुलिस की गिरफ्त

सिरमौर पुलिस की एसआईयू ने नशे के एक कारोबारी को पकड़ने में सफलता हासिल की है। इस कारोबारी को दबोचने के लिए एक हेड कांस्टेबल को चोटें भी आईं हैं। लेकिन पुलिस कर्मी ने नशे का कारोबार करने वाले मुख्य सप्लायर को दबोच लिया। इस मामले में एसआईयू ने माजरा पुलिस थाना में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरु कर दी है। पुलिस ने एक गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई अमल में लाई। पुख्ता सूचना के बाद पुलिस ने नाहन-पांवटा सड़क पर हरिपुर खोल के समीप दबिश दी। पुलिस ने आरोपी से स्पास्मो प्रॉक्सिवोन प्लस के 7200 कैप्सूल और 100 बोतल कफ सिरप बरामद की है। मामले में पुलिस ने आरोपी प्रदीप कुमार (32) पुत्र बरखराम निवासी चौली, बिलासपुर, हरियाणा को गिरफ्तार किया है। बताया जा रहा है कि आरोपी मारुति जेन कार (एचआर26 आर-7703) में सभी नॉरकोटिक्स वस्तुओं को ले जा रहा था। कार में 100 से अधिक बोतल में से खांसी की दवाई, जिसमें 67 बोतल कोड्रेक्स-एनएफ, 9 बोतल तमगवित, 6 बोतल टफेक्स-टी और 18 बोतल कोरेक्स की पाई गई हैं।

पुलिस के अनुसार गिरफ्तार किया आरोपी नाहन शहर में नशे के कैप्सूल के सबसे बड़े थोक सप्लायर के रूप में काम करता था और छोटे पैमाने पर ड्रग पेडलर्स को नशा बेचता था। कार्रवाई के दौरान एसआईयू टीम के एचसी वेद प्रकाश आरोपी का पीछा करते हुए चोटिल होने के साथ साथ फ्रेक्चर भी हो गए। लेकिन उन्होंने आरोपी को पकड़कर ही दम लिया। एसपी रोहित मालपानी ने मामले की पुष्टि की है। ❖ **शूलिनी समाचार न्यूज डेस्क**

राममंदिर विध्वंस एवं तुलसीदास

-अरुण लवानिया

आपको कुछ मुसलमान और कम्युनिस्ट यह चिल्लाते दिखेंगे कि अगर बाबर ने हिन्दू मंदिर तोड़ा होता तो तुलसीदास ने लिखा होता। मगर इसका कोई प्रमाण रामचरितमानस में नहीं मिलता। सत्य यह है कि तुलसीदास जी ने बाबर के हाथों राममंदिर विधवंस का वर्णन लिखा था। यह वर्णन रामचरितमानस में नहीं अपितु दोहा शतक में किया था। तुलसीदास ने दोहा शतक 1590 मे लिखा था। इसके आठ दोहे 85 से 92 में मंदिर के तोड़े जाने का स्पष्ट वर्णन है। इसे रायबरेली के तालुकदार राय बहादुर बाबू सिंह ने 1944 में प्रकाशित किया। यह राम जंत्रालय प्रेस से छपा। यह एक ही बार छपा और इसकी एक प्रति जौनपुर के शांदिखुर्द गांव में उपलब्ध है। इलाहाबाद उच्च नयायालय में जब बहस शुरु हुई तो श्री रामभद्राचार्य जी को Indian Evidence Act के अंतर्गत एक expert witness के तौर पर बुलाया गया और इस सवाल का उत्तर पूछा गया। उन्होंने कहा कि यह सही है कि श्री रामचरित मानस में इस घटना का वर्णन नहीं है लेकिन तुलसीदास ने इसका वर्णन अपनी अन्य कृति 'तुलसी दोहा शतक' में किया है जो कि श्री रामचरित मानस से कम प्रचलित है।

जहाँ तक राम चरित मानस कि बात है उसमें तो कहीं भी मुगलों की चर्चा नहीं है इसका मतलब ये निकाला जाना गलत होगा कि तुलसीदास के समय में मुगल नहीं रहे। 'तुलसी दोहा शतक' में इस बात का साफ उल्लेख किया है कि किस तरह से राम मंदिर को तोड़ा गया-'राम जनम महि मंदरहिं, तोरि मसीत बनाय, जवहिं बहुत हिन्दू हते, तुलसी किन्ही हाय' अर्थात्- जन्मभूमि का मन्दिर नष्ट करके, उन्होंने एक मस्जिद बनाई। साथ ही उन्होंने बहुत से हिंदुओं की हत्या की। इससे तुलसीदास शोकाकुल हुये। 'दल्यो मीरबाकी अवध मन्दिर रामसमाज, तुलसी रोवत हृदय हति हति त्राहि त्राहि रघुराज'- मीरबाकी ने मन्दिर तथा रामसमाज (राम दरबार की मूर्तियों) को नष्ट किया। राम से रक्षा की याचना करते हुए विदीर्ण हृदय तुलसी रोये- 'राम जनम मन्दिर जहाँ असत अवध के बीच, तुलसी रची मसीत तहँ मीरबाकी खल नीच'- तुलसीदास जी कहते हैं कि अयोध्या के मध्य जहाँ राम मन्दिर था वहाँ नीच मीरबाकी ने मस्जिद बनाई। और भी चौपाईयां प्रमाणित करती हैं जैसे- 'रामायन घरि घट जहं, श्रुति पुरान उपखान, तुलसी जवन अजान तहं, कइयों कुरान अजान' -तुलसीदास कहते हैं कि जहाँ रामायण, श्रुति, वेद, पुराण से सम्बंधित प्रवचन होते थे, घण्टे, घड़ियाल बजते थे, वहाँ अज्ञानी यवनों की कुरआन और अजान होने लगे।

मन्त्र उपनिषद ब्राह्मनहुँ बहु पुरान इतिहास, जवन जराये रोष भरि करि तुलसी परिहास- 'तुलसीदास कहते हैं दुष्ट यवनों ने बहुत सारे मन्त्र, उपनिषद, ब्राह्मणग्रन्थों तथा पुराण और इतिहास सम्बन्धी ग्रन्थों का उपहास करते हुये उन्हें जला दिया। 'सिखा सूत्र से हीन करि बल ते हिन्दू लोग, भमरि भगाये देश ते तुलसी कठिन कुजोग। तुलसीदास जी कहते हैं कि ताकत से हिंदुओं की शिखा (चोटी) और यज्ञोपवीत से रहित करके उनको गृहविहीन कर अपने पैतृक देश से भगा दिया। अब यह स्पष्ट हो गया कि गोस्वामी तुलसीदास की इस रचना में जन्मभूमि विध्वंस का विस्तृत रूप से वर्णन किया है। ❖

राम मंदिर निर्माण के लिए रामभक्तों की रैली

-सुरेन्द्र कुमार

दिल्ली के राम लीला मैदान में राम भक्तों का जो हुजूम उमड़ा उसे देख कर समस्त देशवासी सोचने पर मजबूर हो गए। हजारों की संख्या में यहाँ एकत्रित जनसैलाब ने अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए एक विशाल रैली आयोजित की थी। आक्रोशित भीड़ ने स्पष्ट रूप से सरकार, न्यायपालिका और संसद को अपने नारों के माध्यम से संदेश दिया कि अब वे और अधिक सब्र नहीं कर सकते। हिंदुस्तान के हिंदुओं की प्रतीक्षा अब जवाब दे रही है। अब राजनेताओं को इस मुद्दे पर राजनीति करने के लिए और वक्त नहीं दिया जा सकता। भगवा टोपियां पहने हजारों लोगों ने यहां धर्मसभा में दिनभर राम राज्य फिर लाएंगे, मंदिर वहीं बनाएँगे, जय श्री राम जय अयोध्या जैसे नारों से अपनी माँग का बखान किया। विश्व हिन्दू परिषद की धर्मसभा में कई संतों, वरिष्ठ वीएचपी नेताओं ने संबोधित किया। अब राम जन्म भूमि पर भव्य मंदिर बनकर ही रहेगा। माननीय न्यायालय को भी जनमानस की भावनाओं की कद्र करनी चाहिए तथा हिंदुओं की माँग पर उदारतापूर्ण निर्णय लेना चाहिए। जबकि वीएचपी के अध्यक्ष विष्णु सदाशिव कोकजे ने बुलंद होकर कहा, लोकतंत्र में जन भावनाएँ सर्वोपरि हैं। इसलिए अदालत को हमारी भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

संत स्वामी परमानंद ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि वह राम मंदिर निर्माण के अपने वादे को पूरा नहीं कर सकती तो हम भी उन्हें सबक सिखाएंगे। दरअसल जिस मुद्दे पर पिछले पच्चीस वर्षों से हमारे राजनीतिक दल राजनीतिक रोटियां सेंक रहे हैं। इन दिनों एक बार पुन: सियासी मुद्दा बनने की ओर अग्रसर हो चुका है। ढाई दशकों से अनसुलझा यह चर्चित विवाद आखिर सुलझाने के लिए और कितने साल की प्रतीक्षा करवाएगा? ये कुछ यक्ष प्रश्न हैं जिनका जवाब हमें आने वाले वक्त में मिलेगा। इस गंभीर समस्या से राजनीतिक फायदा कांग्रेस को होगा या भाजपा को कहना मुश्किल है। परंतु इतना तय है कि बीते दिनों रामलीला मैदान में देश के हिंदुओं की विशाल सभा हमारे संसद, सरकार और सर्वोच्च न्यायालय की नींद को झकझोरने में कामयाब हुई है। देर सवेर अब ये प्रमुख संस्थाएँ जो भी निर्णय लेंगी वह स्पष्ट व कारगर होगा तथा देश के कल्याण के लिए हितकारी साबित हो सकता है। अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए अब तक कई बार आंदोलन हुए पर इस विशाल सभा जैसी जन आक्रोश रैली आज तक शायद ही हुई हो। अब देखना दिलचस्प होगा कि आगामी दिनों में राम लीला मैदान में घटित अयोध्या लीला किस करवट बैठती है। राम भक्तों ने यहाँ स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि रण में तबदील हुई हिंदुस्तानियों की ये यातनाएं अब मंदिर निर्माण के उपरांत ही शांत होगी। ठीक है यदि करोड़ों देशवासियों की धार्मिक आस्था आपको ढोंग प्रतीत हो रही है तो आप अपना नकारात्मक व साकारात्मक पक्ष तो देश के समक्ष रखिए। आखिर कब तक आप देशवासियों को मंदिर-मस्जिद पर राजनीति करके बाँटते रहेंगे। आपके मंदिर मस्जिद से अब तक लोगों को कोई सरोकार नहीं था। लेकिन जब आपकी निम्न स्तर की सियासत ने इस मुद्दे को वर्षों तक अपनी राजनीति चमकाने के लिए प्रयोग किया। तो जनमानस को मजबूरन इससे संबंधित साक्ष्य जुटाने पड़े तथा आज उन्हीं के आधार पर वे राम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण की वकालत कर रहे हैं। जो दल देश के करोड़ों हिंदुस्तानियों की धार्मिक आकांक्षाओं की कद्र नहीं कर सकता उससे आमजन की समृद्धि की आशा करना नाइंसाफी होगा। जिस भारत की 80 फीसदी जनसंख्या हिन्दुओं की है उस देश में यदि भगवान राम के एक मंदिर बनाने में दशक बीत जाएँ तो यह हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर एक बड़ा सवालिया निशान है। अत: केंद्र सरकार और सर्वोच्च न्यायालय को चाहिए कि इस गंभीर मुद्दे को प्राथमिकता के आधार पर सर्वप्रथम विचार विमर्श के लिए पटल पर रखे तथा यथा संभव इस पर एक सटीक निर्णय लेने का प्रयास करें। ❖

नशा

छा गया है अंधेरा देश रो रहा है,
जरा सोचो सभी , युवा का क्या हो रहा है ?
जम चुका है रक्त नसों का आज के नौजवानों में
मदहोश बेखबर है आज वे नशे के मयखाने में
परिवार जाग रहा है पथ ताकते हुए
नशे से लड़खड़ाता वह सड़कों में सो रहा है
जरा सोचो सभी युवा का क्या हो रहा है ?
मर गई है सोच फिर भी शान ऊंची है
कल बड़ा भयावह ये बातें नहीं सोची हैं
चरस, गांजा, चिट्टा और हैरोइन यहाँ
यही है कारण जिसमें युवा डूब रहा है
जरा सोचो सभी युवा का क्या हो रहा है ?
खाली हो रहा है परिवार , राखी थाम रोती बहनें
जो बनना था सहारा बुजुर्गों का ,
वही बोझ बनाता जा रहा है
जल रहा है नशे की आग में
यहाँ-वहाँ हर जगह युवा
बढ़ानी थी जिसने शान वही कुल को मिटा रहा है
जरा सोचो सभी युवा का क्या हो रहा है ?

जाह्नवी ठाकुर, रा.महावि. संजौली

मन्नी तन्नी सख्सीयत

पहाडी भासा जो
बुणने तांई
डॉ पीयूष जी
इक जोत जगाई
असां हत्थे
पकडाई गे।
सुच्चे-सुनक्खे
म्हाचली साहित रा
इक बडा भण्डारा
असां हत्थे
पकडाई गे।
ऐ गल्ल
सच्च ए
तिनां बिना
असां अज
सन्नाटे च रेई गे।

तिन्हा जे किछ लिखेया
असां तिस का
बडा भरी सिखेया।
म्हाचली लेखकां रा
इक बडा टोल्ला
सैह् बणाई गे।
दिखा अज
डॉ पीयूष
सब्भना रे दिलां बिच
मन्नी तन्नी
सख्सीयत बणी
छाई गे।

छैल ग्रां

अखे- वखे ओ छैल खरा बणांणा
आले- द्वाले रा कूड़ा कर्कट टांणा
अहां सब्बो किठ्ठे होई के करगे
ग्रांए जो तांई साफ बणांणा
मते सारे अहां रूख बुट्टे लांगे
सैली- सैली खरी बाँकी धरती बणांगे
तांई साफ खरा वातावरण बणांगे
सेलेयां रूखां बेई पखेरू गांदे
दिलडुए च जीणें री तांग जगांदे
हरा- भरा हुंगा अपणा आला-द्वाला
तांई हुन्दा अपणा दिलडु मस्त प्यारा
अपणेयां खेत्रें मेहणत मष्ठाक्कत करणी
अप्पू सुआडु बोई साग सब्बजी उगाणी
तांई घरे मियो बरक्कत पांणी
हथ्थ पैर लांअगें तांई मोटापा गटणा
तांई माहणुओं एह हड्ड राम हटणा
सब्बो चांगे तांई हुणी साफ-. सफ़ाई
अपणे आपे लेआ लियाक्त जगाई
घरे रे चारचफेरे अहां रखणी सफ़ाई
बमारीयां देंणीया दूर नठ्ठाई
खरीयाँ छैल बाँकीया थांई कन्नै रूहांअ च
गलांदे मालिक अप्पु आई बसदे
दुख द्ररिद्रता अप्पु दूर नठ्ठदे।

सुषमा देवी, भरमाड़, काँगड़ा, हि. प्र.

खितड़ू (गुदगुदी)

नेता लांदे खितड़ू
घिच घिच करी
हसदे लोक!
खेल खेले नेता
ख्लौणा बणे लोक!
हीरे मोती री गुठ्ठीयां नेता हत्थे
खाली हत्थ मलदे लोक!
इंआ लगदा
जिंहा हूंदी
हौअ्ले हौअ्ले
घणा लहू चुसदी जोक!

कश्मीर सिंह

हरि चरण में लीन हो गए आचार्य स्व. हरिनंद

शिमला के ठियोग के करियाल जठाई गांव में 12 जनवरी 1928 को पैदा हुए संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान पण्डित हरिनन्द शर्मा का गत 05 दिसंबर को प्रात:काल के समय आकस्मिक निधन हो गया जिसके कारण प्रदेश के एक शिक्षाविद् एवं उद्भट्ट विद्वान के जाने से समाज को एक अपूरणीय क्षति हुई है। स्व. श्री हरिनन्द शर्मा का क्षेत्र में एक विशेष स्थान था। वह संस्कृतानुरागी तो थे ही इसके वर्द्धन के लिए उन्होंने अथक परिश्रम किया। उन्होंने विविध ज्योतिशास्त्रों की रचना की एवं जन्म-पत्रादि निर्माण तथा फलित ज्योतिष में उनकी विशेष रूचि थी। शिक्षा प्राप्ति के साथ-साथ कई निजी विद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। विशिष्ट विद्वान स्वामी अविनेश्वरानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित एवं हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त संस्कृत विद्यापीठ (संस्कृत महाविद्यालय) तुंगेश (चियोग) में पूर्व में आचार्य के पद पर रहे। सेवानिवृत्ति के बाद भी संस्कृत विद्यापीठ एवं आश्रम समिति तुंगेश के अध्यक्ष पद पर उत्तदायित्व का कई वर्षों तक निवर्हन किया।

शिक्षा कार्य के साथ-साथ लेखन कार्य में रूचि रही। आकाशवाणी शिमला से भी आपकी कई वार्ताएं प्रसारित हुई। अखिल भारतीय सत्र पर प्रसारवार्ता 'विश्व शांति का संस्थापक भारत' में भाग लिया। विभिन्न पत्रिकाओं में ज्योतिष तथा अन्य विषयों पर हिन्दी में लेख प्रकाशित हुए। 'तुंगेश्वरी स्तोत्र' संस्कृत श्लोकबद्ध लघु पुस्तिका की रचना की। संस्कृत के कई अन्य लेख संस्कृत पत्रिका दिव्य ज्योति में प्रकाशित हुए। विद्याध्ययन काल से ही वह सेवाकार्यों में लगे रहते थे, सौ से अधिक शिष्यों को कर्मकाण्ड में प्रवृत्त किया व साथ ही साथ श्रीमद्भागवत पुराण तथा शिवपुराण आदि का प्रशिक्षण भी दिया। अपने शिष्यों को पुराण प्रवचन व हिन्दू संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए भी तैयार किया। स्व. हरिनंद शर्मा अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ कर परमात्मा के श्री चरणों में लीन हो गए। उस दिवंगत आत्मा को मातृवन्दना संस्थान की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि प्रेषित। ❖

समाज को सर्वस्व अर्पित कर चले प्रो. राम प्रकाश कांसल

गृहस्थ जीवन बिताते हुए भी संघ कार्य को ही अपने जीवन की प्राथमिकता मानने वाले कार्यकर्ताओं की विशाल मालिका के बल पर ही आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य दुनिया भर में प्रभावी हुआ है। ऐसी ही मालिका में प्रेरणापुंजों में से एक हैं श्री प्रो. राम प्रकाश कांसल जी। प्रो. राम प्रकाश कांसल बाल्यकाल में ही संघ के स्वयंसेवक बने। उन्होंने सैन्ट्रल बैंक में मैनेजर के पद पर नौकरी शुरू की। गाँधी हत्या का झूठा आरोप लगा जब संघ पर 1948 में प्रतिबंध थोपा गया तो प्रतिबन्ध के विरोध में हुए सत्याग्रह के समय पोल कैंट जेल में थे, जहां वह 42 दिन की भूख हड़ताल पर रहे। पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् वह एम.आर. कॉलेज फाजिल्का में 1962 से 1983 तक प्राध्यापक रहे।

आपातकाल के दौरान संघ पर लगे दूसरे प्रतिबंध के समय में फिरोजपुर जेल में रहे। 25 जून, 1989 का वो मनहूस दिवस जब मोगा की शाखा पर आतंकवादी हमला हुआ, जिसमें 25 कार्यकर्ता शहीद हो गए, उसमें प्रो. कांसल को भी 8 गोलियां लगी थी। 26 जून को तत्कालीन सरकार्यवाह मा. शेषाद्रि जी डी.एम.सी. हॉस्पिटल में घायलों को कुशलमंगल जानने पहुंचे थे। जब शेषार्द्रि जी ने मृत्यु से जूझ रहे प्रो.कांसल जी का हाल पूछा तो कांसल जी ने प्रतिप्रश्न करते हुए पूछा कि ''आज उसी संघ स्थान पर शाखा लगी है क्या?'' तो उनको उत्तर देते हुए शेषाद्रि जी ने कहा कि, लगी है, तो ''मैं ठीक हूँ'' कह कर कांसल जी प्रसन्न हुए। मृत्यु शय्या पर लेटे भी उन्हें केवल संगठन के कार्य की नितांत चिंता थी।

अन्तिम दिनों में स्व. प्रो. कांसल अपने बड़े बेटे डा. दिनेश कांसल के साथ मैडिकल कॉलेज टांडा में रहे। 21 नवम्बर, 2018 को प्रो. कांसल ने अपनी सांसारिक जीवन यात्रा पूरी की। उनकी इच्छा के अनुसार उनका नेत्रदान तथा मेडिकल कॉलेज में देहदान भी किया गया, ताकि निधन के बाद भी यह शरीर किसी काम आ सके। ऐसे आधुनिक दधीचि, कर्मठ कार्यकर्ता, समाज को सर्वस्व अर्पित करने वाले और अखंड स्वयंसेवक को शत् शत् नमन्। ❖

रामेश्वर

गुणों का भंडार है आंवला

- डॉ. लोकेश जंगवीर

बुढ़ापे तक जवान रखता है आंवला, 10 से ज्यादा रोगों का करे खात्मा, आंवले का वैज्ञानिक नाम फाइलैंथस एम्बलिका है। आंवला गुणों का भंडार है जो आसानी से उपलब्ध होता है।

आंवला फल विटामिन सी का प्रचुर स्रोत है। प्रकृति में पाई जाने वाले किसी भी चीज में इतना विटामिन सी नहीं पाया जाता। वैज्ञानिक शोधों में तमाम रोगों के उपचार करने की खूबियों का पता चला है। विषाणुओं से शरीर के प्रतिरक्षी तंत्र को मजबूत बनाता है, इसकी खास बात यह है कि इसमें मौजूद विटामिन गर्म करने और सुखाने से भी खत्म नहीं होता। आंवला गुणों का भंडार है जो आसानी से उपलब्ध होता है। इसके चमत्कारी गुणों के कारण इसे अमृत फल भी कहा जाता है। इसके अनेकों औषधीय लाभ भी हैं। आमतौर पर इस पेड़ की लंबाई 20 से 25 फीट होती है। यह एशिया, यूरोप और अफ्रीका के अलावा भारत में आंवला के पेड़ खूब पाए जाते हैं। इसकी खेती भी की जाती है।

फल एक गुण अनेक

1. आयुर्वेद में आंवला कब्ज का रामबाण, रक्तशोधक, पाचक, रुचिवर्धक तथा अतिसार, प्रमेह, दाह, पीलिया, अम्ल पित्त, रक्तविकार, रक्तस्राव, बवासीर, कब्ज, अजीर्ण, बदहजमी, श्वास, खांसी, रक्तप्रदर नाशक तथा आयुवर्धक है।
2. निरंतर प्रयोग से बाल टूटना, रूसी, बाल सफेद होना रुक जाते हैं। नेत्र ज्योति तेज होती है। दांत मजबूत होते हैं।
3. रोज एक आंवला खाने से त्वचा की नमी बरकरार रहती है, इससे त्वचा पर कांति आती है और पिंपल्स जैसी समस्याएं भी दूर होती हैं।

परंपरागत प्रयोग

1. आंवला आयुर्वेद और यूनानी पैथी की प्रसिद्ध दवाइयों, च्यवनप्राश, ब्रह्म रसायन, धात्री रसायन, अनोशदारू , त्रिफला रसायन, आमलकी रसायन, त्रिफला चूर्ण, धात्ररिष्ट, त्रिफलारिष्ट, त्रिफला घृत आदि के साथ मुरब्बे, शर्बत, केश तेल आदि निर्माण में प्रयुक्त होता है। रक्तवर्धक नवायस लौह, धात्री लौह, योगराज रसायन, त्रिफला मंडूर आंवले से बनाए जाते हैं।
2. मानव शरीर में सिर्फ ल्यूकोडर्मा में आंवला उपयोग नहीं होता। इसके अलावा सिर से पैर तक का कोई ऐसा रोग नहीं जहां आंवला दवा या खुराक के रूप में उपयोगी न रहता हो।
3. भारतीय गृहिणी की रसोई में भी आंवला चटनी, सब्जी, आचार, मुरब्बे के रूप में सदा से विराजमान है।
4. इसके प्रयोग से शरीर की प्रतिरक्षी शक्ति सुरक्षित रहती है। बार-बार होने वाली बीमारियों से बचाव करने वाला आंवला 'विटामिन सी' का सबसे बड़ा भंडार है। इसका विटामिन 'सी' पकाने, सुखाने, तलने, पुराना होने पर भी नष्ट नहीं होता। ❖

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

बूढ़ी राजनीति व परिवारवाद से युवा ही दिला सकते हैं मुक्ति

-राजेश वर्मा

हमारे देश में सरकारी व निजी क्षेत्र में नौकरी के लिए न्यूनतम व अधिकतम शैक्षणिक योग्यता के साथ-साथ आयु सीमा भी निर्धारित की गयी है वहीं उसी सरकारी कर्मचारी को सरकार 58 या 60 वर्ष की आयु पूरी करने के बाद सेवानिवृत्त कर देती है। किसी विशेष कक्षा में नियमित रूप से पढ़ाई करने के लिए आयु का पैमाना है। बच्चे को स्कूल प्रवेश के लिए भी आयु सीमा निर्धारित की गयी है। मतलब हर जगह आयु का पैमाना है, भले ही वह किसी संस्थान में प्रवेश का हो या सेवानिवृत्ति का हो। सभी जगह यह नियम हैं परंतु एक क्षेत्र ऐसा है जहां यह नियम बेमानी साबित हो जाते हैं और वह क्षेत्र है राजनीति। हर किसी की जुबान पर यह बात आती है की आखिर यह राजनीतिज्ञों की सेवानिवृत्ति की अधिकतम सीमा क्या होनी चाहिए? राजनीतिज्ञों को आखिर ऐसा क्या लगाव है राजनीति से की वे कभी थकते ही नही हैं। वैसे तो उम्रदराज नेताओं को खुद ही पीछे हट जाना चाहिए लेकिन यदि ऐसा नहीं भी होता है तो युवाओं को खुद आगे आना चाहिए। युवाओं का देश व प्रदेश की राजनीति में आगे आना क्यों जरूरी है इसके पीछे भी कई कारण हैं। एक तरफ हम दुनिया में अपनी युवा आबादी का डंका पीट रहे हैं तो दूसरी तरफ उन्हें देश निमार्ण में भागीदार नहीं बना रहे। संयुक्त राष्ट्र की ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारत दुनिया का सबसे युवा देश है। यहां 65 करोड़ आबादी युवा है जबकि पड़ोसी देश चीन की यही आबादी 56.9 करोड़ है। कोई भी देश अपनी कामकाजी आबादी से बेहतर परिणाम तभी हासिल कर सकता है जब उस पर निर्भर रहने वाली आबादी अपेक्षाकृत कम हो।

आज राजनीति में बाहुबल व शक्ति प्रदर्शन दिनोंदिन बढ़ रहा है। पढ़ी-लिखी युवा पीढ़ी को इसमें बदलाव की पहल करनी चाहिए। मायने यह नहीं रखता की वह किस जाति-धर्म से संबंध रखते हैं। आज देश की राजनीतिक तस्वीर बदलने की जरूरत है। इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता की राजनीतिक पार्टियों ने कई युवाओं को मौके भी दिए हैं लेकिन इसमें भी परिवारवाद व सगे संबंधियों का राजनीतिक दलों से संबंध ज्यादा देखने को मिलता है। इसके सैकड़ों उदाहरण विभिन्न प्रांतों व देश में देखने को मिल जाएंगे जबकि दूसरे युवाओं को उतना मौका नहीं मिल सका जितना मिलना चाहिए। हम पिछले कई चुनावों से देखते आ रहे हैं, कि राजनैतिक दल चिर-परिचित नेताओं को ही बार-बार मौका देते हैं। बौद्धिक क्षमता रखने वाले व पढ़े- लिखे युवाओं का राजनीति में आना बेहद जरूरी है। जब अच्छे लोग सियासत में होंगे तो उनका नजरिया भी विकास पर आधारित होगा। युवा पीढ़ी में व्यापारी, वकील, शिक्षक, पत्रकार, किसान, कवि-साहित्यकार और अन्य क्षेत्र के लोगों को भी आगे आकर सक्रिय राजनीति में हिस्सा लेना चाहिए क्योंकि किसी भी पार्टी से बढ़कर उनकी अपनी व्यक्तिगत छवि होती है। यह नेता खुद तो राजनीति में जमकर मौज उड़ा रहे हैं साथ ही अपने बच्चों, रिश्तेदारों के लिए भी अपनी विरासत सौंप जाते हैं। इस तरह आज का युवा वर्ग पहले इनकी जी हजूरी में जीवन व्यतीत कर देता है फिर इनके परिवार के लिए अपने जीवन को समर्पित कर देता है।

बात करें राजनीति में शुचिता की तो राजनीति में भी स्वच्छता उतनी ही जरूरी है जितनी की वह हमारे जीवन में जरूरी है। एक तरफ स्कूल, कॉलेज-यूनिवर्सिटी तथा अन्य संस्थान शिक्षकों और संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं तो दूसरी तरफ देश-प्रदेश में सभी युवाओं के लिए सरकारी नौकरियों या रोजगार के अवसर कम हो रहे हैं। युवा भी आए दिन हो रहे नित-नए बदलाव से कहीं न कहीं प्रभावित रहा है। किसी वर्ग विशेष अथवा धर्म के व्यक्ति को टिकट देने की परम्परा को अब बदला जाना चाहिए। जो जनप्रतिनिधि चुनाव जीतने के बाद देश या अपने राज्यों की समस्याओं व नीतियों की आवाज न उठा पाते हों ऐसे नेताओं के चुनने की परम्परा बदली जानी चाहिए। यह सब नौजवान ही कर सकते हैं और कोई नहीं। युवाओं की समस्याएं भी देश में लगातार बढ़ रही हैं। इसमें सबसे अहम है रोजगार। नियमित डिग्री लेने के बावजूद युवाओं को मनमाफिक रोजगार नहीं मिलता। अच्छे और तेज-तर्रार युवाओं को राजनीति में जरूर आना चाहिए। ❖

बहुएं होती हैं अधिक केयरिंग

-ज्योत्सना अनूप यादव

रिश्ते बर्फ के गोले की तरह होते हैं जिन्हें बनाना तो आसान है, लेकिन बनाए रखना काफी मुश्किल। अमूमन रिश्ते को चार तरह से समझा जा सकता है। रक्त संबंधी, सामाजिक, व्यावसायिक और भावनात्मक। खून के रिश्ते भले ही हमें जन्म से मिल जाते हों, लेकिन उन्हें बनाए रखने के लिए निभाना ज्यादा जरुरी होता है। निभाने से मतलब उन पर ध्यान देना पड़ता है। ध्यान देने से आशय इसमें समय और समझदारी की जरूरत होती है। रिश्ते निभाने में महिलाएं पुरूषों से कहीं आगे हैं। अभी हाल ही में आए एक सर्वे में यह खुलासा हुआ है।

आम धारणा है कि घर के बड़े बुजुर्गों की अनदेखी व उत्पीड़न बहुएं करती हैं। कई बार ऐसे प्रकरण या वीडियोज भी सामने आते हैं जहां बहू सास-ससुर को यातना देती नजर आ जाती है। लेकिन हाल में हुआ एक सर्वे अलग तस्वीर पेश करता है। सर्वे के मुताबिक घर के बुजुर्गों के उत्पीडन के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार उनके पुत्र हैं। इस सर्वे के आंकड़ों के मुताबिक सिर्फ राजधानी भोपाल में ही लगभग 80 फीसदी बुजुर्गों का उत्पीड़न होता है और इसमें से लगभग 61 फीसदी बेटे होते हैं जो अपने बुजुर्ग माता-पिता को अनदेखा करते हैं। गौरतलब है कि ये आंकड़े जुटाए हैं सीनियर सिटीजंस के लिए काम करने वाली संस्था हेल्पेज इंडिया ने। इसकी सर्वे रिपोर्ट में बुजुर्गों की स्थिति को बारीकी से दर्शाया गया है। इन आंकड़ों को जुटाने में इस संस्था ने देश के अलग-अलग राज्यों के 23 शहरों में सर्वे किया था। इस सर्वे में प्रत्येक शहर के 60 साल से ज्यादा उम्र के 218 बुजुर्ग पुरुष व महिलाओं से बातचीत की गयी। इस तरह कुल 5014 बुजुर्गों को इस सर्वे में शामिल किया गया था। रिपोर्ट आगे कहती है कि 34 फीसदी बुजुर्ग बहुओं के अत्याचार का शिकार बनते हैं जबकि इसमें बेटियों की भी कुछ प्रतिशत भागीदारी है। हालांकि माता-पिता के उत्पीड़न में बेटियों की हिस्सेदारी पूरे देश में लगभग 6-7 प्रतिशत ही है। सीनियर सिटीजंस के साथ होने वाला उत्पीड़न का आंकड़ा शहर के हिसाब से घटता और बढ़ता दिखता है। मसलन 23 शहरों में की गई रिपोर्ट के मुताबिक इनके साथ इससे ज्यादा उत्पीड़न या कहें दुर्व्यवहार मैंगलोर में होता है। यहां 47 फीसदी बुजुर्ग अनदेखी और शोषण का शिकार होते हैं। जबकि नंबर 2 पर है अहमदाबाद, जहां 46 फीसदी बुजुर्गों के साथ उत्पीडन हो रहा है। इसके अलावा भोपाल में 39 फीसदी, अमृतसर में 35 फीसदी और दिल्ली में 33 फीसदी का आंकड़ा है। उम्र के आखिरी पड़ाव में आते ही घर और बाजार में बुजुर्गों को खोटा सिक्का समझा जाने लगता है। इसलिए सब इनके साथ बेरुखी से पेश आते हैं। **वर्ल्ड एल्डर एब्यूज अवेयरनेस डे** के मौके पर हुए एक सर्वे में करीब 64 फीसदी बुजुर्गों का मानना था कि उम्र या सुस्त होने की वजह से लोग उनसे रुखेपन से बात करते हैं। जिन बुजुर्गों को सर्वे में शामिल किया गया, उनमें से 44 फीसदी लोगों का कहना था कि सार्वजनिक स्थानों पर उनके साथ बहुत गलत व्यवहार किया जाता है। खासतौर से सरकारी अस्पतालों और दफ्तरों के कर्मचारियों का व्यवहार सबसे उदासीन होता है। बेंगलूरू, हैदराबाद, भुवनेश्वर, मुंबई और चेन्नई ऐसी सिटीज हैं जहां पब्लिक प्लेस पर सीनियर सिटीजंस के साथ सबसे बुरा बर्ताव होता है।

कुल मिलाकर देश का कोई भी कोना ऐसा नहीं है जहां घर के बड़े बुजुर्गों के साथ अमानवीय व्यवहार न होता हो। कहीं ज्यादा तो कहीं कम है। इस सर्वे से यह बात भी सामने आती है कि जिन बहुओं को सास-ससुर का उत्पीडन करने के लिए कोसा जाता है, दरअसल इसके लिए ये कम और इनके पति ज्यादा दोषी हैं। जब बेटे ही मां-बाप का उत्पीड़न करेंगे तो उनकी पत्नियां भी उन्ही का साथ देंगी। भारतीय समाज में बुजुर्गों को मार्ग दर्शक और पारिवारिक मुखिया के नाते हमेशा आदर दिया गया है लेकिन आज की युवा और आधुनिक पीढ़ी तकनीक, पैसा और भोग विलास में इतनी मशरूफ है कि उसी पेड़ को काटने पर तुली है जो उसे छांव देता है। रिश्ता चाहे खून का हो, सामाजिक, व्यावसायिक या भावनात्मक। हर रिश्ते के लिए एक मर्यादा तय कर लेनी चाहिए। यह मर्यादा भी एक तरफा न होकर दोनों पक्षों को देखते हुए तय करें। इस लिहाज से इस रिश्ते में खुद को इतना ही डुबोएं जितने में तैरना आसान हो। मतलब रिश्तों में जुड़ाव उतना ही रखें, जिसे प्रेम पूर्वक निभा सकें। इससे कोई समस्या नहीं आएगी। ❖

युवाओं को इतिहास से रखा गया अनभिज्ञ

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आम्बेकर ने कहा कि युवाओं को इतिहास की जानकारी होना बेहद आवश्यक है। आजादी के बाद से युवाओं को इतिहास के काफी बड़े हिस्से से अनभिज्ञ रखा गया। हमें ऐसी कोर्ट नहीं चाहिए जो आधी रात को आतंकवादियों के लिए खुलती हो, ऐसे वकील नहीं चाहिएं जो उनके लिए लड़ते हों, देश में कई अच्छे लोग भी हैं उनको बढ़ावा देना चाहिए।एक बार मुझसे रूस में पूछा गया कि फेमिनिस्ट पर चर्चा चल रही थी, मुझे अपने विचारों को रखने को कहा गया तो मैंने कहा मेरा देश फेमिनिस्ट नहीं फैमिलिस्ट देश है। आम्बेकर युवा कुम्भ के दूसरे सत्र में संबोधित कर रहे थे।

हमें अपनी आत्मा को भोगी नहीं बनने देना। राष्ट्रवाद और अध्यात्म एक दूसरे के पूरक हैं, अगर हम शिवा जी को देखते हैं तो उनके पीछे स्वामी रामदास को भी देखना होगा। आत्मा नित्य है, आत्मा शाश्वत है और इसको निश्छल होना चाहिए।हमें 1947 से अलग एक सपनों का भारत बनाना है। लोकमान्य तिलक ने कहा था देश के आक्रमणकारियों का विरोध करना, यहां के युवाओं का अधिकार है। सुनील आम्बेकर ने कहा कि हम इतिहास पढ़ते नहीं, बल्कि उससे सीखते हैं। ये देश के युवाओं का संकल्प है कि अब 1947 का भारत नहीं जो पूर्व की विभाजन संबंधित बात कर सके। ये सिर्फ युवा कुंभ नहीं बल्कि युवा संकल्प है। ये 1947 का भारत नहीं है। देश में होने वाला हर काम देश की संस्कृति, देश की वीरता से जुड़ा होना चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी छिपे तथ्यों को बताने का कार्य करने के लिए संकल्पित है। हमें बाहुबली जैसी और फिल्मों की आवश्यकता है।देश के फिल्म जगत को भी देश के प्रति सजग होना होगा। हमें कसाब को चर्चा का विषय ना बना कर भगत सिंह पर चर्चा करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि क्रांति का अर्थ देश को तोड़ना नहीं है, बल्कि इसका अर्थ भारत के उत्थान से है। देश में आज हम जहां खड़े हैं, वहीं से नए भारत का निर्माण करना होगा। आज हमें देश में एक नया नेतृत्व मिला है। भारत का आगे का कथानक इस मिट्टी से उखड़ेगा नहीं, बल्कि मिट्टी से जुड़ेगा।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के अखिल भारतीय विश्वविद्यालय प्रमुख श्रीहरि बोरिकर ने कहा कि भारत के युवाओं में जज्बा है। गांवों में प्रतिभा छिपी हुई है। उन्हें मंच प्रदान करने की आवश्यकता है। भारत में युवा आयोग बनना चाहिए। युवा आगे बढ़ना चाहता है। भारत में बाहुबली फिल्म जैसी लाखों कहानियां हैं, जो युवाओं को प्रेरित करती हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया में केवल नासा का नाम था। आज भारत के इसरो का नाम है। इसरो ने सबसे कम लागत में मंगल ग्रह पर जाने का कीर्तिमान स्थापित करके दिखाया है। उसने 104 सेटेलाइट छोड़े हैं। जिस तरह जमीन में हीरा छिपा होता है और उसे निखारा जाता है, उसी तरह युवाओं को मौका देने व निखारने की जरूरत है।

बोरिकर ने कहा कि कुम्भ में राष्ट्रीय एकात्मता सुदृढ़ होती है।देश के खिलाफ षड्यंत्र रचने वाले कुछ लोग हम युवाओं के खिलाफ चुनौती हैं, इनसे निपटना होगा। ये चीन के समर्थन से देश के खिलाफ लड़ते हैं। हर विश्वविद्यालय में नक्सलवादी और माओवादी दिखते हैं, लेकिन राष्ट्रवादी युवा ऐसा नहीं देख सकते। देश की रक्षा करना क्रांतिकारियों से सीखा है। गरीबी दूर करने के लिए भाषण की नहीं, बल्कि व्यवहार की जरूरत है। ❖

सूदना -गाजर गांव

पश्चिम उत्तर प्रदेश के नये जिले हापुड़ के बाहरी भाग में स्थित सूदना गांव अब 'गाजर गांव' के रूप में विख्यात है। इसका श्रेय भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा विकसित एक उन्नत किस्म 'पूसा रुधिर' को जाता है। खेत के उत्पादन और लाभ को बढ़ाने तथा एक 'मॉडल' गांव के रूप में विकसित करने के लिए भाकृअनुस ने वर्ष 2010 में चार गांवों को चुना, जिनमें से सूदना गांव एक है। यहां गेहूं-धन-गन्ना-सब्जियों की पारम्परिक फसल प्रणाली का चलन था। इस गांव के किसान सब्जियों में गाजर भी उगाया करते थे। हालांकि 'पूसा रुधिर' गाजर की खेती से पहले यहां गाजर का उत्पादन फायदे का सौदा नहीं माना जाता था। गांव में गाजर उत्पादन की क्षमता के मद्देनजर वर्ष 2011-12 में भाकृअनुसं ने इस गांव के एक सीमांत कृषक चरण सिंह के 1.75 एकड़ के खेत में 'पूसा रुधिर' गाजर उगाने की शुरूआत की।

परिवर्तन

गाजर की फसल में आदानों के अधिकतम उपयोग के लिए किसान को नियमित सलाह दी गयी। कृषक को 'पूसा रुधिर' गाजर की 393.75 क्विं./है. की दर से उम्दा फसल मिली, यह प्रचलित किस्म से 10 क्विं/है. अधिक थी। इससे 264,286 रु./है. का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ, यह लाभ स्थानीय किस्म से 37 प्रतिशत अधिक है। इस नयी किस्म के श्रेष्ठ गुणों की वजह से स्थानीय बाजार में 18 प्रतिशत अधिक दाम भी प्राप्त हुआ। 'पूसा रुधिर' गाजर को 928 रु. धक्विं. का मूल्य मिला, यह मूल्य प्रचलित किस्म से 140 रु./है. अधिक है। आकर्षक लंबी लाल जड़ें, चमकता लाल रंग, समान आकार और अधिक मिठास इसका कारण है। इसका टीएसएस मान 9.5 ब्रिक्स है।

'पूसा रुधिर' का बेहतर प्रदर्शन

अधिक उत्पादन और लाभ के साथ 'पूसा रुधिर' के बेहतर प्रदर्शन से उत्साहित होकर गांव के अन्य किसानों ने भी इसमें रुचि दिखाई। वर्ष 2012 के शीतकाल में अन्य 20 कृषकों ने 'पूसा रुधिर' के बीज मांगे और भाकृअनुसं द्वारा 200 कि.ग्रा. बीज लागत मूल्य पर दिये गये। तत्पश्चात एक वर्ष में ही 'पूसा रुधिर' गांव के लगभग 60 प्रतिशत (90 एकड़) क्षेत्रमें उगाई गई। 'पूसा रुधिर' के लाभ से प्रभावित होकर, गाजर उत्पादकों ने सामुदायिक आधर पर तीन सफाई मशीनें लगाकर, गाजर की यांत्रिक सफाई शुरु कर दी। इससे गाजरें जल्दी धुलती हैं और गाजरों को कम से कम नुकसान होता है। 'पूसा रुधिर' के अधिक उत्पादन और अगले वर्ष के लिए प्रीमियम मूल्य के कारण कृषकों को 2,22,690 रु./है. का आकर्षक मूल्य प्राप्त हुआ।

लगातार बढ़ती मांग

पूसा रुधिर की लोकप्रियता अब दिल्ली और एनसीआर के विभिन्न बाजारों तक पहुंचती है। रबी 2013-14 में यह किस्म लगभग 120 एकड़ (75 प्रतिशत) क्षेत्र में उगाई गयी है। आगामी वर्षों में श्पूसा रुधिरश और अधिक क्षेत्रमें फैलकर सर्वाधिक लोकप्रिय किस्म बन जायेगी। इसके परिणामस्वरूप श्पूसा रुधिरश की मांग लगातार बढ़ रही है। कमल सिंह और जयभगवान सैनी (दोनों सीमान्त कृषक) ने इसके बीजोत्पादन का कार्य आरम्भ किया है। भाकृअनुसं के वैज्ञानिक इन्हें तकनीकी मार्गदर्शन और सहायता प्रदान कर रहे हैं। पिछले वर्ष के 145 कि.ग्रा. गाजर बीज उत्पादन से 58,000 रु. की अतिरिक्त आमदनी की उम्मीद है। अचरज की बात नहीं कि ये कृषक निकट भविष्य समय में समर्थ उद्यमी बन सकेंगे। अन्य किस्मों की तुलना में 'पूसा रुधिर' पौष्टिक गुणों में अधिक समृद्ध है। परीक्षण में कैरिटोनोयड 7.41 मि.ग्रा. और फिनोल 45.15 मि.ग्रा. प्रति 100 ग्रा. पाया गया। इन तत्वों का प्राथमिक गुण इनका एंटी ऑक्सीडेंट गुण है, जो कोशिकाओं की असाधरण वृद्धि को सीमित करके कई तरह के कैंसर से बचाव करते हैं। अंत में यह कहना गलत नहीं होगा कि 'पूसा रुधिर' कृषकों और उपभोक्ताओं के लिए वरदान है। ❖

एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अंतर्गत जिला शिमला की उपलब्धियां

क्र.सं.	नाम का विवरण	संख्या (31 मार्च 2018)
1.	कुल परिवारों की संख्या	1,35,039
2.	गरीबी रेखा से ऊपर परिवारों की संख्या	1,03347
3.	गरीबी रेखा से नीचे परिवारों की संख्या	31,682
4.	कुल परिवारों में शौचालयों की उपलब्धता (वर्ष 2012 के सर्वेक्षण के अनुसार)	1,16,537
5.	बिना शौचालय के परिवारों के संख्या (वर्ष 2012 के सर्वेक्षण के अनुसार)	18,502
6.	वर्ष 2012 के पश्चात शौचालयों की उपलब्धता	18,502
7.	कुल ग्राम पंचायतों की संख्या	363

चरण	ठोस तथा तरल कचरा प्रबन्धन हेतु चुनी गई पंचायतें	उपलब्ध करवाई गई धनराशि	अनुमानित व्यय की जाने वाली राशि
प्रथम चरण	78 पंचायतें	1166.00 लाख	
दूसरा चरण	150 पंचायतें		2281.00 लाख
तीसरा चरण	137 पंचायतें		1945.00 लाख

ग्राम पंचायतों को ठोस तथा तरल कचरा प्रबंधन हेतु मु. 7 लाख से 20 लाख की राशि उपलब्ध करवाई जाती है।

उपायुक्त एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी
जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, शिमला

राष्ट्रपति चुनाव लड़ने को तैयार तुलसी गब्बार्ड़

अमरीका की पहली हिंदू सांसद तुलसी गब्बार्ड राष्ट्रपति चुनाव लड़ने की तैयारी कर रही हैं। उन्होंने खुद इस बात की पुष्टि करते हुए कहा कि वह 2020 में राष्ट्रपति चुनाव लड़ने पर गंभीरता से विचार कर रही हैं। अमरीकी संसद में चार कार्यकाल से हवाई का प्रतिनिधित्व कर रहीं डेमोक्रेटिक सांसद गबार्ड ने पहली बार राष्ट्रपति चुनाव लड़ने को लेकर स्पष्ट तौर पर अपनी बात रखी है। गबार्ड ने चुनाव में उतरने से संबंधित एक सवाल के जवाब में कहा कि मैं इस पर गंभीरता से विचार कर रही हूं। उन्होंने कहा कि मैं अपने देश की स्थिति को लेकर चिंतित हूं। मैं इसके लिए बहुत गंभीरता से विचार कर रही हूं। तुलसी गब्बार्ड अगर चुनाव में उतरने की घोषणा करती हैं तो वह अमरीका में राष्ट्रपति का चुनाव लड़ने वाली पहली हिंदू उम्मीदवार होंगी। साल 2020 में चुने जाने पर वह अमरीका की सबसे युवा और पहली महिला राष्ट्रपति बन सकती हैं। नवंबर, 2020 में होने वाले चुनाव में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को चुनौती देने से पहले, उन्हें उस साल की शुरूआत में प्रारंभिक चुनाव में अपने डेमोक्रेटिक पार्टी के नेताओं के खिलाफ लड़ना होगा। इस मुद्दे पर प्रतिक्रिया जानने के लिए गब्बार्ड अपनी पार्टी के नेताओं से बात कर रही हैं और भारतीय मूल के अमरीकी लोगों से संपर्क कर रही हैं। 2020 प्राइमरी चुनाव में भारतीय मूल की सेनेटर कमला हैरिस भी दिख सकती हैं। ❖

सम्पादक के नाम पत्र लेखन सूचना

प्रतिमाह सम्पादक के नाम सर्वश्रेष्ठ पत्र लिखने वाले पाठक को मातृवन्दना संस्थान की ओर से 500 रुपये पुरस्कार राशि या प्रभात प्रकाशन दिल्ली से उपर्युक्त राशि की पुस्तकें भेंट की जाएंगी।

बनें नागरिक पत्रकार

अपने क्षेत्र की कोई विशेष जानकारी/घटना आप पाठकों से साझा करना चाहते हैं तो मातृवन्दना कार्यालय को अवश्य अवगत करवाएं। हम उसको अपनी पत्रिका में प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

मातृवन्दना के रजत जयंती वर्ष पर
सभी पाठकों को स्वामी विवेकानंद जयंती,
नेताजी सुभाषचंद्र बोस जयंती,
हिमाचल राज्यत्व दिवस व
गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
Preetpal Singh

पार्टी फंड से पूरा करें लोक लुभावन घोषणाएं

- पार्थसारथी थपलियाल

लोकतंत्र का अपहरण हो रहा है। सभी राजनीतिक दल अपने-अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति के लिए समाज को भ्रष्ट करने लगे हैं। किसी समय आंध्र प्रदेश में दो रुपये किलो चावल देने की घोषणा के साथ चुनाव में उतरे एनटी रामाराव ने सफलता हासिल की थी। उसके बाद तमिलनाडु की राजनीति के दोनों ध्रुवों ने कभी मुफ्त राशन, कभी साड़ी, कभी सोने की चेन, कभी टी वी देकर वोटर्स को अपने-अपने पक्ष में किया। उत्तर प्रदेश में भी कम्प्यूटर और साइकिल बांटी गई। ऐसा कोई दल नहीं जिसने जीत हासिल करने के लिए किसी न किसी तरह उपकृत न किया हो।

ये जो कुछ भी दिया जाता रहा है वह सत्ता में आने पर सरकारी खजाने से पूर्ति की जाती रही, जिन कुबेरपतियों ने इन्हें चुनाव के लिए धन दिया होता है उन्हें भी 10 गुणा कमाने का मौका देना है, सरकारी बजट की राशि को नेताओं , अधिकारियों और कर्मचारियों की मिली भगत से ठिकाने लगाया जाता रहा है। बहुत कम लोग होते हैं जो सत्ता को सेवा का माध्यम बनाते हैं, इस दौर में अधिकतर लोग भ्रष्ट तरीकों से कमाने के लिए राजनीति में जाते हैं। मेरा सोचना है राजनीति में जनप्रतिधि बनने वाले लोगों की सामाजिक, आर्थिक, मानसिक जांच की व्यवस्था होनी चाहिए।

आज कई समाचार सुनने में आ रहे हैं कि किसानों के कर्ज और राज्यों में भी माफ होंगे। जैसे सुना जा रहा है मध्यप्रदेश में किसानों के 20 हजार करोड़ का कर्ज माफ होगा। ऐसा ही छत्तीसगढ़, राजस्थान, असम , कर्नाटक, गुजरात और दूसरे राज्यों में भी किया जा रहा है। यह अगर केवल भूमिहीन या गरीब किसानों के लिए किया जा रहा हो तो किसी को आपत्ति न हो, लेकिन सभी किसानों की कर्जमाफी कर राजनीतिक दलों ने हमारे गांवों के सच्चे लोगों को भी भ्रष्ट बना दिया है। अब वे अगले चुनाव में उसे ही वोट देंगे जो कर्ज माफ करेगा। यह बहुत बड़ा अपराध है जिसे रोका जाना चाहिए।

अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति संशोधन अधिनियम को जिस तरह लाया गया उससे समाज मे खाई पैदा हुई। भाजपा को मध्यप्रदेश और राजस्थान में उसके परिणाम देखने पड़े। इसी प्रकार जो मध्यम वर्ग का कर दाता है, उसके मन मे भी ख्याल आएगा कि मैं कर भी देता हूँ और जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लिए गए ऋण का इंटरेस्ट भी देता हूँ, मेरा कर्ज भी माफ होना चाहिए। फिर राजनीति के खरीददार वोट खरीदने के लिए पहुंच जाएंगे। इस व्यवस्था पर रोक लगनी चाहिए, चुनाव जीतने के लिए राजनीति करने वाले किसी लोभ लालच का संकेत भी मतदाताओं को न दे सके। लोकलुभावन की ऐसी स्थिति में आधुनिक अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए संसाधन कम पड़ेंगे। देश को बाह्य कर्ज ज्यादा लेना पड़ेगा, फिर उसका इंटरेस्ट भी देना पड़ेगा। देश कमजोर होगा। पाकिस्तान जैसे हाल हो जाएंगे। सरकारी ग्रांट सामाजिक उत्थान, विकास और जनहित के कामों या अत्यंत पिछड़े लोगों को सरकार द्वारा दी जानी चाहिए। अन्यथा सड़कों का विकास नहीं होगा, स्वास्थ्य सेवाएं कमजोर पड़ जाएंगी, शिक्षा में अनुसंधान कार्य रुक जाएंगे। रक्षा पर व्यय घटाना पड़ेगा। कृषि क्षेत्र भी कमजोर होगा। देश की अर्थव्यवस्था गड़बड़ा जाएगी। यदि राजनीतिक दलों को ऐसी कर्जमाफी योजनाएं लानी ही हैं तो अपनी पार्टी के फंड से कर्जमाफी कर सकते हैं, जनता के धन से नहीं। ❖

With best compliments from

SHIVALIK HOSPITAL

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)

Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma

MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma

MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

तीन अजूबे भाई

अंग देश के एक गाँव में एक धनी ब्राह्मण रहता था। उसके तीन पुत्र थे। एक बार ब्राह्मण ने एक यज्ञ करना चाहा। उसके लिए एक समुद्री कछुए की जरूरत हुई। उसने तीनों भाइयों को कछुआ लाने को कहा। वे तीनों समुद्र पर पहुँचे। वहाँ उन्हें एक कछुआ मिल गया। बड़े ने कहा, 'मैं भोजनचंग हूँ, इसलिए कछुए को नहीं छुऊँगा।' मझला बोला, 'मैं नारीचंग हूँ, मैं नहीं ले जाऊँगा। 'सबसे छोटा बोला, 'मैं शैयाचंग हूँ, सो मैं नहीं ले जाऊँगा।'

वे तीनों इस बहस में पड़ गये कि उनमें कौन बढ़कर है। जब वे आपस में इसका फैसला न कर सके तो राजा के पास पहुँचे। राजा ने कहा, 'आप लोग रुकें। मैं तीनों की अलग-अलग जाँच करूँगा।'

इसके बाद राजा ने बढ़िया भोजन तैयार कराया और तीनों खाने बैठे। सबसे बड़े ने कहा, 'मैं खाना नहीं खाऊँगा। इसमें मुर्दे की गन्ध आती है।' वह उठकर चला। राजा ने पता लगाया तो मालूम हुआ कि वह भोजन श्मशान के पास के खेत का बना था। राजा ने कहा, 'तुम सचमुच भोजनचंग हो, तुम्हें भोजन की पहचान है।'

रात के समय राजा ने एक सुन्दर स्त्री को मझले भाई के पास भेजा। ज्यों ही वह वहाँ पहुँची कि मझले भाई ने कहा, 'इसे हटाओ यहाँ से। इसके शरीर से बकरी के दूध की गंध आती है।'

राजा ने यह सुनकर पता लगाया तो मालूम हुआ कि वह स्त्री बचपन में बकरी के दूध पर पली थी। राजा बड़ा खुश हुआ और बोला, 'तुम सचमुच नारीचंग हो।'

इसके बाद उसने तीसरे भाई को सोने के लिए सात गद्दों का पलंग दिया। जैसे ही वह उस पर लेटा कि एकदम चीखकर उठ बैठा। लोगों ने देखा, उसकी पीठ पर एक लाल रेखा खींची थी। राजा को ख़बर मिली तो उसने बिछौने को दिखवाया। सात गद्दों के नीचे उसमें एक बाल निकला। उसी से उसकी पीठ पर लाल लकीर हो गयी थीं।

राजा को बड़ा अचरज हुआ उसने तीनों को एक-एक लाख अशर्फियाँ दीं। अब वे तीनों कछुए को ले जाना भूल गये, वहीं आनन्द से रहने लगे।

इतना कहकर बेताल बोला, 'हे राजन! तुम बताओ, उन तीनों में से बढ़कर कौन था?'

राजा ने कहा, 'मेरे विचार से सबसे बढ़कर शैयाचंग था, क्योंकि उसकी पीठ पर बाल का निशान दिखाई दिया और ढूँढ़ने पर बिस्तर में बाल पाया भी गया। बाकी दो के बारे में तो यह कहा जा सकता है कि उन्होंने किसी से पूछकर जान लिया होगा।'

इतना सुनते ही बेताल फिर पेड़ पर जा लटका। राजा लौटकर वहाँ गया और उसे लेकर लौटा तो उसने अगली कहानी कही। ❖

लालची लोमड़ी की कहानी

एक बार एक लोमड़ी को बहुत जोरों की भूख लगी थी। रास्ते में चलते हुए उसे एक रोटी मिली। वह उस रोटी का पूरा आनंद लेना चाहता थी। इसलिए वह उसे शांति से बैठकर खाने की इच्छा से रोटी को अपने मुँह में डाल कर नदी की ओर चल दी। नदी पर एक छोटा सा पुल था। जब लोमड़ी नदी पार कर रही थी, तभी उसे पानी में अपनी परछाई दिखाई दी। उसने अपनी परछाई को दूसरी लोमड़ी समझा और उसका रोटी छीनना चाहा।

रोटी छीनने के लिए उसने भौंकते हुए नदी में छलाँग लगा दी। मुँह खोलते ही उसके मुँह की रोटी नदी के पानी में गिर कर बह गयी और वो लालची लोमड़ी भूखी ही रह गई। ❖

प्रश्नोत्तरी

1. टीपू सुल्तान ने अंग्रेजों के साथ युद्ध करते हुए कब वीरगति प्राप्त की?
2. बुद्ध में वैराग्य भावना कितने दुखों के कारण बलवती हुई?
3. सम्राट अशोक की वह कौन-सी पत्नी थी, जिसने उसे सबसे ज्यादा प्रभावित किया था?
4. सबसे प्राचीन राजवंश कौन-सा है?
5. अशोक के शिलालेखों को पढ़ने वाला प्रथम अंग्रेज कौन था?
6. महावीर ने जैन संघ की स्थापना कहां की थी?
7. किस विदेशी दूत ने अपने को भागवत घोषित किया था?
8. वैदिक कालीन लोगों ने सर्वप्रथम किस धातु का प्रयोग किया?
9. हल सम्बन्धी अनुष्ठान का पहला व्याख्यात्मक वर्णन कहां से मिला है?
10. किस वेद की रचना गद्य एवं पद्य दोनों में की गई है?

पिछले अंक के उत्तर..

1. यकृत 2. सरदार पटेल 3. स्वामी विवेकानंद 4. अमृतसर 5. मोर 6. लाल बहादुर शास्त्री 7. अब्राहम लिंकन 8. बौद्धमत 9. गुरु नानक देव 10. 1853

पहेली

1. ऐसी कौन सी चीज है जिसे हम दिन में कई बार उठाते हैं और कई बार रखते हैं?
2. अगर एक मुर्गा सुबह अंडा देता है तो वह उसके मालिक को कब मिलेगा ?
3. वह क्या है जो पूरा कमरा भर देता है मगर जगह बिलकुल भी नहीं घेरता है?
4. वह कौन है जो सुबह से लेकर शाम तक सूरज की तरफ ही देखता रहता है?
5. ऐसा कौन सा फल होता है जिसके ऊपर पत्ता होता है?

उत्तर: कदम, कभी नहीं, क्योंकि मुर्गा अंडा देता ही नहीं, प्रकाश, सूरजमुखी

चुटकुले

1. पप्पू जंगल में जा रहा था तभी एक सांप ने पैर पर काट लिया।
   पप्पू को गुस्सा आया और टांग आगे करके बोला, ले काट ले जितना काटना है काट ले।
   सांप ने फिर तीन-चार बार काटा और थक कर बोला, अबे तू इंसान है भूत?
   पप्पू, मैं तो इंसान ही हूं लेकिन साले मेरा यह पैर नकली है।
2. हमारा देश कितनी ही तरक्की क्यों न कर ले... . यहां तो मुड़ने के लिए इंडिकेटर से पहले हाथ से ही इशारा करेंगे।
   सोनू: मेरे कान का ऑपरेशन हो गया। डॉक्टर ने नया कान लगा दिया।
   मोनू: अरे वाह! तुझे भी Happy New EAR-

ईमानदार प्रयास का 1 एक साल विकास का

देश के प्रधानमंत्री
नरेन्द्र मोदी
के मार्गदर्शन एवं
मुख्यमंत्री **जय राम ठाकुर**
के नेतृत्व में

देवभूमि हिमाचल में पूरी होतीं जन आकांक्षाओं का एक साल

नशे के खिलाफ़ अभियान
आईये एकजुट हो जायें
देवभूमि को नशे से बचायें

युवाओं को स्वरोज़गार व रोज़गार
उद्योग लगाने के लिए
युवाओं को 25 प्रतिशत
और महिलाओं को
30 प्रतिशत सब्सिडी

महिलाओं को सौगात
हिमाचल गृहिणी
सुविधा योजना के
तहत लाभार्थी को
मुफ्त गैस कनैक्शन

जन मंच से हो रहा समस्याओं का निदान
25227 मांग पत्र व
शिकायतें प्राप्त
20062 का समाधान

वृद्धावस्था पेंशन बनी सहारा
सीमा पेंशन प्राप्त करने
की आयु सीमा 80 वर्ष
से घटाकर 70 वर्ष की

ज़रूरतमंदों के लिए वरदान
गम्भीर रोगों के इलाज
के लिये मुख्यमंत्री
चिकित्सा सहायता कोष से
आर्थिक सहायता

बेटियों को अनमोल उपहार
बेटी के जन्म पर दी जाने
वाली एकमुश्त उपहार राशि
10,000 रूपये से बढ़ाकर
12,000 रूपये की

नवजात शिशुओं को आशीर्वाद
अस्पताल में जन्म लेने वाले
शिशुओं को दी जा रही
1500 रुपये की
नव आगन्तुक किट।

सूचना एवं जन संपर्क विभाग हिमाचल प्रदेश द्वारा जारी

HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

follow us on: